



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

जैसे कछुआ अपने
अंगों को अपने शरीर में
समेट लेता है, इसी प्रकार
पंडित पुरुष अपनी आत्मा को
पापों से बचा अध्यात्म
में ले जाए।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 25 • अंक 28 • 15 - 21 अप्रैल, 2024



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 13-04-2024 • पेज 12

₹ 10 रुपये

वीतरागता युक्त एकाग्रता होती है महत्त्वपूर्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

रांजनगांव।

7 अप्रैल, 2024

महागणपति मंदिर के लिए प्रसिद्ध रांजनगांव में तेरापंथ धर्मसंघ के गणपति आचार्य श्री महाश्रमण जी का पावन पदार्पण हुआ। परम पूज्य आचार्य श्री ने अपने मुख्य प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक साहित्य में ध्यान का उल्लेख उपलब्ध होता है, एक स्थान पर सद्धान्य का उल्लेख मिलता है। ध्यान के दो प्रकार हो सकते हैं- अच्छा ध्यान और खराब ध्यान।

आगम साहित्य में ध्यान के चार प्रकार भी मिलते हैं- आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल। इनमें से दो धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान साधना में योगदान देने वाले सद्धान्य हैं। आर्त और रौद्र ध्यान तो संकलिप्त है। इष्ट का वियोग होने पर होने वाली व्यथा में लीनता को आर्त ध्यान कहते हैं। अप्रिय का संयोग होने पर भी आर्त ध्यान हो सकता है। अपराध, हिंसा आदि प्रवृत्ति रौद्र ध्यान से जुड़ी हुई है। धर्म और शुक्ल ध्यान



तो बहुत ऊँची चीज है। हम अभी शुक्ल ध्यान की स्थिति में तो नहीं जा सकते पर धर्म ध्यान करने का प्रयास करें। पूज्यवर ने ध्यान के बारे में बताते हुए आगे कहा कि 30 सितंबर 2024 से प्रेक्षाध्यान नामकरण का पचासवां वर्ष स्थापित किया गया है। एक आलम्बन पर मन को नियोजित कर देना या योग का निरोध करने की साधना ध्यान है।

ध्यान में एकाग्रता की बात आती है। मन चंचल होता है। लक्ष्मी, प्राण और जीवन चंचल है,

जवानी और ये सारा संसार चलाचल है। धर्म एक ऐसा तत्त्व है जो निश्चल है और हमें भी निश्चल स्थान पर ले जाने वाला है। धर्म अपने आप में कल्याणकारी है। ध्यान की साधना के द्वारा हम मन की चंचलता को कम करने का प्रयास कर सकते हैं। एकाग्रता होना एक बात है, एकाग्रता कहां हो यह विशेष बात है। वीतरागता युक्त एकाग्रता की महत्ता है। राग-द्वेष युक्त एकाग्रता तो साधना में अवरोधक तत्त्व बन सकती है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

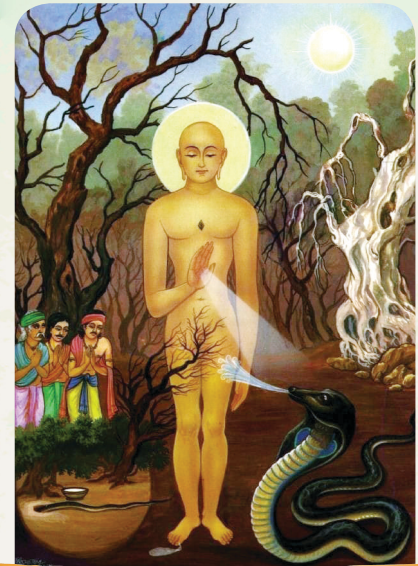
2623वाँ भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस

चैत्र शुक्ला-13 (21 अप्रैल, 2024)

जहां त्याग है वहां
महावीर है।

जहां अनासक्ति है
वहां महावीर है।

जहां अभय है
वहां महावीर है।



पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पादसंस्पृशि ।
निर्विशेषमनस्काय, श्रीवीरस्वामिने नमः ॥

इन्द्र चरणों में नमस्कार कर रहा था और चंडकौशिक नाग पैर को डस रहा था। उन दोनों के प्रति जिसका मन समान था उस महावीर को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रद्धावनतः अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

विशुद्ध व्यवहार से आत्म निर्मलता की दिशा में बढ़ें आगे : आचार्यश्री महाश्रमण



शिक्रापुर।

6 अप्रैल, 2024

आदमी के जीवन व्यवहार में पवित्रता और विशुद्धता आती है और ईमानदारी-अहिंसा का संकल्प मन में रहता है तो मानना चाहिये उसके भीतर गुणवत्ता का संचार हुआ है।

उपरोक्त विचार तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी मंगल देशना में व्यक्त किए। आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि सारे मनुष्य साधु बन जाए यह तो कठिन बात है, जो बड़े भाग्य शाली होते हैं वे ही साधुत्व का स्पर्श कर सकते हैं। साधु

का वेश पहन लेना तो छोटी बात है पर साधुत्व का आत्म परिणामों में प्रवेश होना विशेष बात होती है।

जो साधु नहीं बन सकते, गृहस्थ जीवन जीना चाहते हैं उनके लिए गार्हस्थ्य में आचरण योग्य छोटी-छोटी शिक्षाएं बताई गई हैं।

सामान्य धर्म की पहली बात बताई- सुपात्र दान। साधु घर में आये तो दान की भावना रखनी चाहिए। सुपात्र दान देना धर्म का काम है, लौकिक दान से मान-सम्मान बढ़ सकता है। अच्छी भावना से दान किसी को भी दे वह निष्फल नहीं जाता। दूसरी बात बताई- गुरुओं के प्रति विनय रखना चाहिए।

सामान्य धर्म के बारे में आगे बताया

गया कि सभी जीवों के प्रति दया-अनुकम्पा की भावना होनी चाहिए, न्याय के मार्ग पर चलना चाहिए। दूसरे के हित का ध्यान रखें, हो सके तो किसी का कल्याण करें, किसी का अहित ना करें। आगे बताया गया कि लक्ष्मी, विद्या आदि का अहंकार नहीं करना चाहिए और सज्जनों-साधुओं की संगति करनी चाहिए। पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया सामायिक, पौषध, माला आदि समयबद्ध धर्म है, ये आत्मा की शुद्धि के उपाय हैं, उपासना रूपी धर्म है। दूसरा धर्म व्यवहार का धर्म होता है, व्यवहार में ईमानदारी-नैतिकता रहे। गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत व्यवहार रूपी धर्म है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

शरीर रूपी नौका में हो निश्छिद्र संयम और तप की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

वाघोली।

4 अप्रैल, 2024

हमारे जीवन में शरीर और जीव ये दो तत्व हैं। शास्त्रकार ने कहा कि शरीर एक प्रकार की नौका है और जीव नाविक है। यह संसार एक अर्णव है, सागर है, इस सागर को महर्षि लोग तर जाते हैं। उपरोक्त विचार युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने वाघोली स्थित भारतीय जैन संगठना शैक्षणिक पुनर्वसन प्रकल्प में मुख्य प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को उद्धोधित करते हुए रखे। आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि संसार सागर को तरने के लिए इस शरीर रूपी नौका का उपयोग किया जाये तो आदमी संसार समुद्र पार कर सकता है। नौका निश्छिद्र होनी चाहिए, सच्छिद्र नौका डुबोने वाली हो सकती है। यह मानव जीवन है इसमें पापों के छेद, आश्रवों के छेद न रहे और निश्छिद्र संयम-तप की साधना चले। इस शरीर के द्वारा संयम और तप की साधना होती है, धर्म की आराधना होती है तो



प्राणी संसार समुद्र को पार कर सकता है। आदमी जीवन में कार्य करना चाहता है तो शरीर की सक्षमता चाहिए। शरीर की सक्षमता में तीन बाधाएं आती हैं बुढ़ापा, बीमारी और इंद्रिय शक्ति क्षीणता। शरीर की स्वस्थता में जब तक

ये बाधाएं न आये तब तक धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य कर लेने चाहिए। मानव जीवन का उपयोग आदमी अच्छे रूप में करें और यह सोचे कि इस जीवन में मैं क्या कर सकता हूँ? सबसे महत्वपूर्ण बात है अपनी आत्मा के

कल्याण के लिए त्याग, संयम, तपस्या करने का प्रयास करें। त्याग- संयम रखें, स्वाध्याय करें, ईमानदारी रखें, अहिंसा की चेतना जागृत रहे।

श्रावक के बारह व्रतों के बारे में बताते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि इच्छाओं की

सीमा रखें व भोग-उपभोग का संयम रखें। हमारे जीवन में सदगुण रहें। ये नौका जब निश्छिद्र होगी तो आगे बढ़ेगी। तप और संयम इस नौका के साथ जुड़े हो तो हम इस नौका के सहारे भव सागर पार कर सकेंगे।

हम जैन धर्म से जुड़े हुए भगवान महावीर के शासन से जुड़े हुए हैं। हम अच्छी साधना-आराधना करें। अध्यात्म की संपदा के सामने भौतिक संपदा तो बहुत छोटी है। भौतिकता को भी अध्यात्म के साथ जोड़ दें तो भौतिकता धन्य हो सकती है। ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप यह चार मोक्ष मार्ग हैं, ये बहुत अमूल्य हैं। मानव जीवन रूपी नौका में आध्यात्मिक संपदा का विकास होता रहे।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय महिला मंडल ने गीत का संगान किया। शांतिलाल मुथा, गीता श्यामसुखा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वीतरागता युक्त एकाग्रता...

मन की एकाग्रता के लिए पहले शरीर की अस्थिरता और शिथिलता को साधने का प्रयास होना चाहिए। विविध आलंबनों पर मन भ्रमण करता है वह मन की व्यग्रता है। एक जगह मन को केंद्रित कर लेने से मन की एकाग्रता बढ़ सकती है।

प्रेक्षाध्यान पद्धति के शुभारंभ में आचार्यश्री महाश्रमण जी का बड़ा योगदान है। शरीर में सिर का और वृक्ष में मूल का जो स्थान है, साधुता में वही स्थान ध्यान का होता है। आगमों में चार प्रहर स्वाध्याय के व दो प्रहर ध्यान के उल्लेखित हैं। ध्यान कई रूपों में हो सकता है, भाव क्रिया के रूप में हमारा स्वाध्याय चलता रहे। प्रेक्षाध्यान के पांच सूत्र जीवन शैली के बड़े महत्वपूर्ण सूत्र हैं।

चतुर्दशी के अवसर पर पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए समय प्रबंधन के महत्त्व को समझाया। पूज्यवर के निर्देशानुसार साध्वी समताप्रभा जी एवं साध्वी ऋद्धिप्रभा जी ने समय प्रबंधन के बारे में अपने विचार व्यक्त

किए। साध्वी रुचिरप्रभा जी व साध्वी चेतनप्रभा जी ने लेख पत्र का उच्चारण किया। तत्पश्चात उपस्थित सभी साधु-साध्वियों ने लेख पत्र का सामूहिक उच्चारण किया। पूज्यवर के स्वागत में स्कूल के प्राचार्य डॉ. प्रकाश कटारिया व दर्शन चोरडिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विशुद्ध व्यवहार से आत्म...

उसे जैन-अजैन, नास्तिक-आस्तिक कोई भी अपने व्यवहार में स्वीकार कर सकता है। प्रेक्षाध्यान भी भीतर की शुद्धि, राग-द्वेष मुक्ति की बात सिखाता है। ध्यान, योग, अनुप्रेक्षा से भी हम आत्म निर्मलता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

विद्यार्थियों को भी शिक्षा के साथ अणुव्रत जैसे सामान्य धर्म के संस्कार मिलते रहें तो बच्चे अच्छे बन सकते हैं और अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है, समाज और राष्ट्र का विकास हो सकता है। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

क्रोध या भय से भी ना हो हिंसाकारी झूठ का प्रयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

कोरेगांव भीमा।

5 अप्रैल, 2024

महातपस्वी महाज्ञानी आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना संग कोरेगांव भीमा पधारे। मुख्य प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि जैन धर्म में अठारह पाप की प्रवृत्तियां बताई गई हैं, जो पाप का बंध कराने वाली होती हैं।

अठारह पापों में दूसरा पाप है- मृषावाद अर्थात् झूठ बोलना। आदमी राग-द्वेष के कारण झूठ भी बोल सकता है, झूठा दोषारोपण भी दूसरों पर कर सकता है। शास्त्रकार ने मृषावाद के दो कारण बताये हैं- आत्मार्थ या परार्थ। आदमी या तो खुद के हित या बचाव के लिए या दूसरों के लाभ लिए झूठ बोलता है। गुस्से या भय के कारण भी आदमी झूठ बोल सकता है। पूज्यवर ने मृषावाद के बारे में बताते हुए आगे कहा कि हिंसाकारी झूठ नहीं बोलना चाहिए। साधु के तो तीन करण, तीन योग से जीवन भर के लिए मृषावाद बोलने का त्याग होता है। गृहस्थी भी सच्चाई की आराधना करने का प्रयास करें। सत्य की उपासना करनी चाहिए, तीर्थंकर या गुरु की उपासना भी की जाती है,



अनेक रूपों में उपासना की जा सकती है तो ईमानदारी की भी उपासना करने का प्रयास करना चाहिए।

संकल्प का बल बड़ा होता है। संकल्प बल से भय नहीं लगता है। जिसने भय को जीत लिया वह दुःख मुक्त है। झूठ बोलने का एक कारण भय होता है। मुंह को साफ करने के लिए एक तरीका है मंजन करना। मुंह को साफ रखने का दूसरा तरीका है मुंह से कटु व झूठ नहीं बोलना, मांसाहार नहीं करना, मद्यपान नहीं करना। मुंह तो ऊपरी बात है, मूल में आत्मा को मलिन होने से बचाना है।

अपने लिए या दूसरों के लिए, क्रोध से या भय से, हिंसाकारी झूठ नहीं बोलना चाहिए। हमारा लक्ष्य रहे कि हमारे द्वारा गलत बात न तो लिखी जाए न कही जाए। झूठ से बचना बड़ी बात है। आदमी न भाषण के द्वारा अयथार्थ बोले, न लेखन के द्वारा अयथार्थ बात लिखे। बेईमानी के दो बड़े आयाम हैं- झूठ-कपट और चोरी। इन दोनों को जो छोड़ दे वह ईमानदार है। गृहस्थों को भी ज्यादा से ज्यादा बेईमानी से बचने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम का हुआ आयोजन

आचार्य श्री महाश्रमण जैसी गुणवत्ता हम सबमें हो समाहित

साउथ कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में साउथ कोलकाता महिला मंडल द्वारा कला मन्दिर सभागार में 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम पूरे बंगाल स्तर पर आयोजित किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के दीक्षा के पचास वर्ष परिपूर्ण होने के अवसर पर गुरु की अभिवन्दना हेतु देश भर में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसका शुभारंभ कोलकाता में उनके सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी की पावन सन्निधि में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा थीं। बंगाल के सर्वश्रेष्ठ दैनिक समाचार पत्र सन्मार्ग की अध्यक्ष रूचिका गुप्ता ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' लोगों का अनावरण किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने गुरु की अभिवन्दना करते हुए कहा हमें आचार्य महाश्रमणजी की जीवन शैली से प्रेरणा लेनी चाहिए और गुरु इंगित अनुसार जीवन को नैतिकता, सदभावना व नशामुक्ति की ओर अग्रसर करना चाहिए। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने आचार्य महाश्रमणजी की पुस्तक "आओ हम जीना सीखें" पर प्रकाश डाला व समीक्षात्मक रूप से व्याख्या

करते हुए व्यक्तित्व विकास के सूत्र बताए। कार्यक्रम की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सूरज बरड़िया ने देश भर में होने वाले इस विराट कार्यक्रम की संयोजना करते हुए आचार्य महाश्रमण के आदर्शों व संयम पर्याय के 50 वर्षों की उपलब्धियों का बहिर्नो के द्वारा चित्रण करवाया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सह संयोजिका कुमुद कच्छरा ने साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमणजी की गुणवत्ता हम सब में समाहित हो उनकी आचारनिष्ठा, संघनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, विनम्रता, सहनशीलता के गुण सम्पूर्ण श्रावक समाज में आए।

पर्यावरण संरक्षण अभियान के अन्तर्गत प्लास्टिक रिसाइकलिंग मशीन का औपचारिक लोकार्पण किया गया, जिसे तेरापंथ भवन साउथ कोलकाता में लगाया जाएगा। तत्पश्चात सुप्रसिद्ध युवा संगायक ऋषि दुगड़ और सुप्रसिद्ध युवा संगायिका अभिलाषा बांठिया ने गुरु अभिवन्दना में मधुर स्वर लहरी बिखेरी जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। साउथ कोलकाता महिला मंडल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का संयोजन संयोजिका डॉ. पुखराज सेठिया, अनुपमा नाहटा व बबीता भुतोड़िया ने किया। साउथ कोलकाता की अध्यक्ष पद्मा कोचर ने सभी का स्वागत किया एवं सह-संयोजिका उर्मिला दूगड़ ने आभार ज्ञापित किया।

भगवान महावीर के प्रति भावांजलि

वीर प्रभु को नमन करें

● डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

वीरप्रभु को नमन करें, जन्म जयंती आई है।
खुशियां ही खुशियां भू पर, चिहुंदिशी छाई है।।
मां-त्रिशला का अभिनंदन, करते हम मिलकर सारे।
वर्धमान को जन्म दिया, चमके वे बन ध्रुवतारे।
चैत्री-तेरस की बेला, सबको भाई है।।
राजपाट का मोह तजकर, पहना था संयम का ताज।
उपसर्गों को झेला था, बनकर के तुम वर गिरीराज।
समता से तीर्थकर की, पदवी पाई है।।
नभ धरती में गूंज रहा, शासनपति का जयनारा।
वर्धमान है गण तेरा, लगता जिनशासन प्यारा।
तुमसे पा सिंचन गण की, कलि-कलि विकसाई है।।
भक्तों के भगवान की, आज उतारें आरती।
तीर्थकर महावीर की, गाएं हम गुण भारती।
शासन के दिनकर बज रही, यश-शहनाई है।।

लय - जीवन है पानी की बूंद

आगम रत्नाकर है

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

भक्तों की नगरी में मेरे वीर आते हैं।
परमेश्वर-परमात्मा परमार्थ सिखाते हैं।
योगीश्वर-जगदीश्वर जीना सिखाते हैं।।
तेईस जिनेश्वर की छवि वीर में बसती है।
अध्यात्म के मणिदीप आभा पुलकती है।
तीर्थकर-प्रभुवर का गुण गौरव गाते हैं।।
वे ब्रह्मा-विष्णु-महेश महानायक कहलाते।
वे कल्पतरु चिंतामणि सन्मार्ग दिखलाते।
अखिलेश्वर-अजर-अमर अमृत बरसाते हैं।।
वे दिव्य दिवाकर है वे शांत सुधाकर हैं।
गरिमा है अपरम्पार आगम रत्नाकर हैं।
करुणेश्वर-त्रिशलानन्द अक्षय बनाते हैं।।
घर-घर में खुशहाली जगमग दीवाली है।
जिनवाणी कल्याणी करती रखवाली है।
हृदयेश्वर अर्चा में हम शीघ्र झुकाते हैं।।

लय - जब कोई नहीं

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

शासनश्री साध्वी सोमलता जी हमारे धर्म संघ की एक विशिष्ट साध्वी थीं। पिछले कुछ समय से उनकी अस्वस्थता चल रही थी, अस्वस्थता भी साधारण नहीं असाधारण थी। असह्य अनंत वेदना को उन्होंने साहस धैर्य और मनोयोग के साथ जीता। अंतिम क्षणों में अनशन के साथ अपनी संयम यात्रा को संपन्न कर जीवन को सफल बनाया। वे एक व्यवहार कुशल, मिलनसार और गुणग्राही साध्वी थीं। उनमें रचना धर्मिता की कला थी, वे अच्छे-अच्छे गीतों का निर्माण करती थीं। उनके द्वारा रचित गीतों की पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं उनका वक्तृत्व ओज भरा होता था। प्रवचन कला में कुशल थी उनमें हिंदी, संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। तत्व ज्ञान में भी वे निपुण थी कई बार हम लोगों का विहार में साथ रहने का काम पड़ा है। उनका मृदु व्यवहार मनभावन था। अंतिम दिनों में लघु भ्राता उग्र विहारी मुनि श्री कमल कुमार जी स्वामी का सेवा सहयोग प्राप्त हो गया। यह बहुत बड़ी सौभाग्य की बात है। मुनि श्री के मुखारविंद से चौविहार अनशन प्राप्त करने का शुभ अवसर प्राप्त हो गया। साध्वी श्री सोमलता जी की आत्मा के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना। सहयोगी साध्वियां शकुंतलाश्री जी, संचितयशा जी, जागृतिप्रभा जी, रक्षितयशा जी सभी साध्वियों ने मनोयोग से साध्वी श्री की सेवा का लाभ उठाया। उन सब के प्रति मेरी अनंत-अनंत शुभकामना।

- सुदीर्घजीवी साध्वी विदामां

- साध्वी उज्ज्वलरेखा

युगप्रधान परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा-आशीर्वाद से 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी को रात्रि में साध्वी शकुंतलाजी ने तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया तथा उसी प्रकार चढ़ते परिणामों में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि श्री कमल कुमार जी ने चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। यह स्वयं सोमलताजी के लिए अति गौरव की बात है। साध्वी सोमलता जी ने अमित आत्मबल का परिचय दिया है, यह गुरु भक्ति का आशीर्वाद है। साध्वी सोमलता जी ने भीषण वेदना में सहनशीलता क्षण-क्षण में वर्धमान रखी है, बहुत कर्म निर्जरा हुई है। चारों साध्वियों की सेवा- परिचर्या अनुकरणीय है। कमल कुमार जी स्वामी का भी है सौभाग्य है कि उन्हें यह शुभ अवसर मिला। भाई विजय सिंह आदि पूरे बौद्ध परिवार ने समय-समय पर अच्छी सेवा की है। दादर श्रावक समाज का भी सौभाग्य है कि यह आध्यात्मिक भव्य नजारा देखने को मिला।

- 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा

तेरापंथ धर्म संघ एक प्राणवान धर्म संघ है। वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है जिसे भिक्षु शासन में साधना करने का शुभ अवसर उपलब्ध होता है। ऐसा ही दुर्लभ अवसर साध्वी सोमलता जी को प्राप्त हुआ। साध्वी प्रमुख लाडांजी के हाथों दीक्षित होकर अपनी अध्यात्म यात्रा को आगे बढ़ाते हुए आपने अनेक क्षेत्रों में विकास किया। आपकी गायन कला और गीत निर्माण की कला में आपकी साहित्यिक प्रतिभा के दर्शन होते हैं। आपकी मिलनसारिता, सरलता, व्याख्यान शैली सबको आकृष्ट करने वाली थी। इस वर्ष नंदनवन में आपको गुरुदेव की उपासना का दुर्लभ संयोग प्राप्त हुआ। आपके भ्राता मुनि कमल कुमार जी ने प्रलंब विहार कर आपको दर्शन दिया वह इतिहास का दस्तावेज बन गया। समाधिस्थ रहते हुए आपने अपनी संयम यात्रा सानंद संपन्न की। आपकी आत्मा शीघ्र मोक्ष वरण करे, यही मंगल कामना। साध्वी शकुंतला जी, साध्वी संचितयशा जी, साध्वी जागृति प्रभा जी, साध्वी रक्षितयशा जी ने जिस अहोभाव के साथ साध्वीश्री की सेवा की वह अनुमोदना योग्य है।

- साध्वी पीयूषप्रभा आदि साध्वी वृंद

भिक्षु गण के नीलगगन में इन्द्रधनुष लहराया।
गंगाणा की लाडली से तेरापंथ हरसाया।।
देव गुरु धर्म श्रद्धा से, जीवन धन्य बनाया,
भिक्षु शासन के गौरव को, शिखरों सदा चढ़ाया।
आगम बत्तीस वाचन से, नव इतिहास रचाया।।
जिनकी प्रवचन पटुता से, यह नंदनवन मुस्काया,
प्रियभाषी मृदुभाषी का, आकर्षण सदा सुहाया।
साधना आराधना से, शिव-सुख अविचल पाया।।
सेवा निष्ठा की सौरभ से, कण-कण बन गया पावन,
गुरु निष्ठा गण निष्ठा से, महकाया जीवन गुलशन।
संस्कारों से व्यवहारों से, भारी सुयश कमाया।।
शासन मंदिर शासन पूजा, जिनशासन मन की थड़कन,
शासन की पूजावेदी पर, तन-मन प्राण किए अर्पण।
अद्भुत अभिनव मनस्विनी ने, सूरज नया उगाया।।
प्राणकोष में नवपद पावन, सफलता की कुंजी,
ध्यानयोग से साम्ययोग से, पायी अद्भुत महापूजी।
आत्मबल से मनोबल से, सुयश शंख बजाया।।

लय - जनम जनम का साथ

- साध्वी परमयशा



भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर विशेष

महावीरों के सिद्धांतों को समझने और प्रयोग करने का प्रयास करें

● मुनि कमलकुमार ●

भगवान महावीर का जन्म वर्तमान बिहार राज्य के क्षत्रिय कुंडग्राम में माता त्रिशला एवं पिता सिद्धार्थ के घर हुआ। आपके बड़े भाई का नाम नन्दी वर्धन था। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के चौबीसवें तीर्थंकर कहलाये। आप ही एक मात्र ऐसे तीर्थंकर हुए जो दो माताओं की कुक्षी में रहे। पहले आप देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षी में 82 दिन रहे परंतु देवेन्द्र के आदेशानुसार गर्भ का परिवर्तन किया गया और माता त्रिशला की कुक्षी से आपका जन्म हुआ। तीर्थंकरों के पंच कल्याणक होते हैं- च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। इन पांचों समय देवता उत्सव मनाते हैं, नारकी के जीव भी प्रसन्न होते हैं। नरक और देव गति में पैदा होने वाले जीवों को अवधि ज्ञान होता है वे अवधि ज्ञान के योग से जानकर पांचों समय तीर्थंकर बनने वालों का स्वागत सम्मान करते हैं। जो जीव तीर्थंकर बनने वाले होते हैं उनको भी तीन ज्ञान मति, श्रुत और अवधि गर्भकाल से ही होते हैं।

भगवान महावीर ने गर्भ में ही यह संकल्प कर दिया था कि जब तक माता-पिता जीवित रहेंगे तब तक दीक्षा नहीं लूंगा। इसी कारण लगभग 28 वर्ष तक आप गृहस्थ जीवन में रहे। जब माता-पिता का स्वर्गवास हो गया तब आपने अपने बड़े भाई से दीक्षा की अनुमति मांगी पर अनुमति नहीं मिलने पर दो वर्ष तक घर में साधना करते रहे।

आपने तीस वर्ष की अवस्था में दीक्षा स्वीकार की और साढ़े बारह वर्ष घोर तपस्या के बाद आपको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। आप साधना काल में निर्जन स्थानों में रहकर ध्यान-मौन करते, तपस्या में पानी का भी सेवन नहीं करते। आपकी तीव्र तपस्या के आंकड़ों को सुनकर-पढ़कर हृदय कांप उठता है। आपकी प्रथम देशना में कोई भी व्रती नहीं बना परन्तु दूसरी देशना से अंतिम तक की आपकी देशना चार तीर्थ की वृद्धि करने वाली साबित हुई। आपके शासन काल में चौदह हजार साधु और छत्तीस हजार साध्वियां दीक्षित हुए। आपने दो प्रकार के धर्म की व्याख्या की- महाव्रत और अणुव्रत।

भगवान महावीर के मुख्य सिद्धांत थे- अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत। अतीत में इन्हीं से समस्या का समाधान होता था, वर्तमान में भी अगर इन तीनों पर गहराई से चिंतन किया जाये तो स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज, स्वस्थ देश और

स्वस्थ विश्व का सपना साकार हो सकता है। हिंसा, परिग्रह और एकांत चिंतन व्यक्ति को कभी अमन चैन से रहना नहीं सीखा सकता है।

भगवान महावीर ने साहस कर महिलाओं को दीक्षित किया उनका कथन था कि महिलाओं को भी मोक्ष का अधिकार है। महावीर के समय में महिलाओं के साथ बड़ा ही अत्याचार चल रहा था, सती प्रथा, दास प्रथा जैसी कुरूपतियां व्यापक बनी हुई थी। महावीर ने अपने उपदेशों से सतीप्रथा और दासप्रथा का नामोनिशान मिटा दिया। आज हम उच्च पदों पर आसीन महिलाओं को देखते हैं उसे भगवान महावीर के ही सार्थक श्रम का परिणाम समझना चाहिये। भगवान महावीर जितने आध्यात्मिक थे उससे अधिक वे वैज्ञानिक थे। आज हम जितने वैज्ञानिक उपकरण देख रहे हैं, यह सब अधिक उनकी दिव्य देशना का ही प्रताप मानना चाहिये। भगवान महावीर ने कहा मैं जो उपदेश देता हूँ मेरी वाणी लोक के अंत तक पहुंचती है, मैं यहां बैठा हूँ पर सर्वत्र दिखाई दे रहा हूँ। ऐसी बातें श्रदालु तो सुनकर प्रसन्न होते परंतु अन्य लोग उपहास करते। परंतु आज हम देखते हैं मोबाईल और टी.वी. के कारण दूर से भी आसानी से सुना और देखा जा सकता है। उन्होंने कहा था कि पानी का अपव्यय मत करो, पानी की एक बूंद में असंख्य जीव हैं, जिसको आज के वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि शक्ति के लिए ध्यान का अभ्यास करो जिससे स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी।

आज हम देखते हैं कि ध्यान का क्रम छूटता जा रहा है जिससे स्मरण शक्ति का ह्रास होता जा रहा है। उन्होंने कहा था गुस्सा विकास का लक्षण नहीं है, क्षमा से व्यक्ति आत्मा और स्वास्थ्य का ही नहीं परिवार, व्यापार, सत्कार सब में आगे बढ़ता है। आज हम इसे अच्छी तरह से देख पा रहे हैं। घर-घर में तनाव, टकराव, अलगाव, मन-मुटाव, दुराव जो बढ़ रहा है उसमें मुख्य कारण गुस्सा ही है। यह वर्ष भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाण वर्ष है हम अधिक से अधिक भगवान के उपदेशों को, सिद्धांतों को पढ़ने, समझने और प्रयोग करने का प्रयास करें जिससे यह देव दुर्लभ मनुष्य जन्म सफल ही नहीं सुफल हो। केवल आयोजनों से हम अपने जीवन को सफल नहीं कर सकते हम उस प्रभु की वाणी को आत्मसात करके सिद्ध बुद्ध बन सकते हैं। आयोजनों के साथ-साथ महावीर के सिद्धांतों को अपनाने का प्रयास करें।

महावीर का जन्म अहिंसा, मैत्री, समता और संयम का जन्म है

● साध्वी अणिमाश्री, साध्वी सुधाप्रभा ●

बीज से वटवृक्ष बनने वाली ऊर्ध्वारोही चेतना का नाम है- भगवान महावीर। अज्ञात से ज्ञात की यात्रा में शिखर का स्पर्श करने वाली पवित्र चेतना का नाम है- भगवान महावीर। अजेय पराक्रम के पुरोध पुरुष का नाम है- भगवान महावीर।

अजेय पराक्रम के अक्षय स्रोत भगवान महावीर को प्राप्तकर धरा धन्य हो उठी। दिशाओं ने मंगल गीत गाकर चरम तीर्थपति की वर्धापना की। अम्बर ने अभय का अनूठा आशीर्वाद दिया। मां त्रिशला के आंगन में जिनशासन के धवल भास्कर ने अवतरित होकर समूचे विश्व को अमन-चैन का पैगाम दिया। भगवान महावीर महावीर का जन्म व्यक्ति का नहीं समष्टि का जन्म है।

भगवान महावीर का जन्म अहिंसा का जन्म है। उन्होंने कहा- 'अहिंसा परमो धर्मः'। उन्होंने मन, वचन एवं काया से अहिंसा की अखण्ड आराधना की। स्थूल हिंसा ही नहीं सूक्ष्म हिंसा का भी परित्याग कर अहिंसामय बन गए। उनके शरीर के रोम-रोम से अहिंसा की मंदाकिनी प्रवाहित होती रही।

आज जरूरत है महावीर की अहिंसा हमारे जीवन में अवतरित हो। हम सिर्फ स्थूल हिंसा पर ही अपने ध्यान को केन्द्रित न करें, बल्कि वाचिक हिंसा व मानसिक हिंसा से बचने का भी अभ्यास करें। अहिंसा हमारी जीवन शैली का अंग बने। हम अहिंसा के आभूषण से जीवन का श्रृंगार करें एवं रिश्तों में मिठास घोलने का यत्न करें।

भगवान महावीर का जन्म मैत्री का जन्म है। उन्होंने कहा- 'मैत्रि मे सव्वभूएसु', सब प्राणियों के प्रति मैत्री हो। उन्होंने प्राणी जगत को मैत्री का संदेश दिया। उनके अन्तस्तल से मैत्री का निर्झर प्रस्फुटित हुआ और चारों ओर फैल गया।

भगवान महावीर के मैत्री भाव ने चंडकौशिक को भद्रकौशिक बना दिया। प्रचण्ड दृष्टिषि सर्प चण्डकौशिक भगवान के चरणगुष्ठ से मैत्री का अमृतपान कर सदा-सदा के लिए शांत हो गया। भगवान महावीर के जीवन से मैत्री का मंत्र लेकर हम भी अपने जीवन को मुदितामय बनाएं। भगवान महावीर का जन्म करुणा का जन्म है। उनके मन उपवन में करुणा के फूल खिले, जिसकी सुवास से धरती-अम्बर सुवासित हो गए। महावीर के हृदय से करुणा का दरिया हिलोरे लेता था, इसलिए वो जन-जन के भगवान बने।

एक बार का प्रसंग, राजकुमार वर्धमान बचपन में अपने आंगन में क्रीड़ा कर रहे थे। खेलते-खेलते उनका ध्यान आंगन में बर्तन साफ करने वाली दासी पर गया। दासी बर्तन धोते-धोते रो रही थी एवं अपने पल्लू से आंखें पौछ रही थी। राजकुमार वर्धमान उस दासी के पास पहुंचे एवं पूछा- मैया! क्या हुआ?

क्यों रो रही हो? दासी ने कहा- राजकुमार तुम यहां से चले जाओ, यहां खड़े मत रहो। ठेकेदार मुझे डांटेंगा। राजकुमार ने कहा- नहीं जाऊंगा, पहले तुम मुझे रोने का कारण बताओ। तब दासी ने कहा-राजकुमार! आपको देखकर मुझे अपने पुत्र की याद आ गई। मेरा पुत्र आज बुखार से तप रहा है, उसने मुझे कहा- मां। तुम आज काम पर मत जाओ, मेरे पास ही बैठो। किन्तु ये ठेकेदार मुझे छुट्टी नहीं दे रहा है। वो कहता है कि अपना काम पूरा करके जाओ। आपको खेलते देखकर मुझे रोना आ गया। मेरा बेटा भी आपके जितना है। अगर वो ठीक होता तो वो भी आपकी तरह खेलता कूदता। आज उसको मेरी जरूरत है किन्तु मैं एक दासी हूँ, अपनी इच्छा से नहीं जा सकती। बालक वर्द्धमान का हृदय करुणा से द्रवित हो गया। उन्होंने कहा- मैया! ये बर्तन मैं साफ करूंगा, तुम अपने पुत्र की संभाल करो। सचमुच वो करुणा के महासागर थे। उनकी संवेदनशीलता एवं करुणा ने दुनिया को करुणा का बोध पाठ पढ़ाया। भगवान महावीर का जन्म समता का जन्म है। भगवान महावीर ने अपने जीवन में समता की उत्कृष्ट साधना की। अनुकूल प्रतिकूल किसी भी परिस्थिति में उनकी समता विखण्डित नहीं हुई। उन्होंने संदेश दिया 'पुढवी समे मुणी हवेज्जा' पृथ्वी की तरह सहनशील बने।

भगवान महावीर के जीवन में अनेक उपसर्ग आए। संगम देव ने 20 मारणान्तिक उपसर्ग दिए। ग्वाले ने पैरों में खीर पकाई, कानों में कीलें ठोकी गईं। अनार्य-देशों में भयंकर कष्ट आए पर वे मेरु पर्वत की तरह अप्रकम्प व अडौल रहे। उनके भीतर धरणी-सा धीरज था। यदि महावीर की समता हमारी जीवन-पोथी का मुख्य पृष्ठ बन जाए तो जीवन पोथी सुन्दर एवं शानदार बन सकती है। भगवान महावीर का जन्म संयम का जन्म है। उनके शरीर के कण-कण से संयम की साधना का नाद अनुगूँजित होता था। उन्होंने अपने जीवन-सागर में उठने वाली राग-द्वेष की चंचल उर्मियों को संयम की पतवार से शांत किया। साधना के शिखर पुरुष भगवान महावीर की जीवन यात्रा में अहिंसा, मैत्री, समता, करुणा, संयम का प्रवाह अवरिल बहता ही रहता था। उनका सम्पूर्ण जीवन अप्रमत्त योग की अनिर्वचनीय कहानी है। उनकी अनासक्ति की साधना और साहस ने उन्हें राजकुमार वर्द्धमान से तीर्थंकर महावीर बना दिया।

अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर ने उनके पथ का अनुगामी बनने की बात नहीं कही, उन्होंने नहीं कहा कि तुम मेरे पुजारी बनो। महावीर को तो महावीरत्व ही पसंद है। हर व्यक्ति महावीर बनने की दिशा में प्रस्थान करे, तभी महावीर जयंती मनाना सार्थक होगा।



संक्षिप्त खबर

गुरु दर्शन यात्रा सानंद सम्पन्न

गोरेगांव, मुंबई। तीर्थंकर के प्रतिनिधि, आचार्य श्री महाश्रमण जी के श्री चरणों में दो दिवसीय गुरु दर्शन यात्रा सानंद सम्पन्न हुई। 28 मार्च 2024 की रात्रि में प्रस्थान कर गोरेगांव का संघ पूज्य प्रवर के दर्शनार्थ पहुंचा। ब्रह्म मुहूर्त में आचार्य प्रवर के दर्शन कर प्रभु के आभामंडल की ऊर्जा से ओतप्रोत होकर सामायिक साधना करके दिन की शुभ शुरुआत हुयी। आचार्यप्रवर के विहार, प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। तत्पश्चात साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वी वर्या संबुद्धयशा जी एवं अन्य चारित्रात्माओं के दर्शन एवं सेवा, उपासना की। सांयकालीन सामायिक के बाद आचार्यप्रवर के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया। दूसरे दिन दोपहर में आचार्यप्रवर की सेवा उपासना करते हुए गोरेगांव में शेष काल में ज्यादा से ज्यादा चारित्रात्माओं के विराजने की अर्ज की। चारित्रात्माओं की सेवा उपासना कर संघ ने पुनः मुंबई की ओर प्रस्थान किया। संघ को सफल बनाने में ओजस्वी कवि प्रकाश धाकड़ की विशेष रूप से उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा के वरिष्ठ श्रावक भीमराज चंडालिया, पारस गेलड़ा, संयोजक राकेश बोहरा, पदाधिकारियों एवं श्रावक समाज की सराहनीय सहभागिता एवं सहयोग से गुरु दर्शन यात्रा सानंद सम्पन्न हुई।

गुरु के मुखारविंद से निकले हर संकल्प होते हैं पूरे

बेलगांव, कर्नाटक। साध्वी पावनप्रभा जी एवं साध्वी सिद्धप्रभा जी का बोरगांव इचलकरंजी से तेरह किलोमीटर का विहार कर कर्नाटक की सीमा में मंगल प्रवेश हुआ। बेलगांव के कुंद कुंद स्कूल में कर्नाटक मंगल प्रवेश पर साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि गुरुदेव से प्राप्त इंगित आराधना ही हमारे जीवन का लक्ष्य रहता है। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा कि कर्नाटक वासियों पर आचार्यश्री महाश्रमण जी का विशेष कृपा है। इस वर्ष इस राज्य को सात चातुर्मास प्राप्त हुए हैं। सहवर्ती साध्वीवृंद का अच्छा सहयोग मिल रहा है। कर्नाटक सीमा के मंगल प्रवेश पर साध्वी आस्थाश्री जी ने साध्वी वृंद का स्वागत अभिनंदन किया। हिरियुर से तेजराज चोपड़ा, देवराज चोपड़ा, चित्रदुर्गा से भावना जैन, विजयनगर बैंगलोर से तेयुप मंत्री कमलेश चोपड़ा ने साध्वी वृंद के स्वागत में विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर तेयुप सहमंत्री रौनक चौरडिया, विहार सेवा संयोजक पंकज कोचर एवं कर्नाटक, महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट सम्मान समारोह

हावड़ा। अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट -2023 में राष्ट्रीय स्तर पर स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों का सम्मान समारोह अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी के सानिध्य में संगम हॉल लिलुआ में किया गया। लिलुआ सभा के अध्यक्ष प्रमील बाफना ने सबका स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रताप दुगड़ (वरिष्ठ उपाध्यक्ष अणुविभा) ने अणुव्रत के संदर्भ में अपना वक्तव्य रखा। श्री हनुमान बालिका विद्यालय से राष्ट्रीय स्तर पर स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा संजना सिंह एवं सौम्यश्री चक्रवर्ती का सम्मान किया गया। मुनि जिनेशकुमार जी ने जीवन में अणुव्रत की उपयोगिता और महत्व के बारे में विस्तार से बताया एवं अणुव्रत के उद्घोष संयम खलु जीवन: अर्थात् 'संयम ही जीवन है' को जीवन में उतारने की प्रेरणा प्रदान की। मुनिश्री ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट की चित्रकला प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। कार्यक्रम में अणुविभा के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, मीडिया प्रभारी पंकज दुधेड़िया, अणुव्रत समिति हावड़ा अध्यक्ष दीपक नखत एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ कोलकाता। चुरु निवासी कोलकाता प्रवासी अमित-संयुक्ता कोठारी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीषकुमार मालू एवं बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से अच्छी संख्या में त्याग प्रत्याख्यान किए गए।

जीवन निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा कब्बन पार्क में बैंगलोर संभाग स्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला 'अनस्टॉपेबल' आयोजित की गई। तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने सबका स्वागत एवं अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत, अभातेयुप परामर्शक विमल कटारिया, बैंगलोर संभाग प्रमुख अमित दक, तेयुप पूर्व अध्यक्ष सम्पत चावत, विजयनगर किशोर मंडल प्रभारी विकास जैन ने व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक सरोकारों को सहेजते हुए अपने-अपने

अनुभव साझा किए। अनस्टॉपेबल कार्यशाला में सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी एवं कार्यशाला के मुख्य वक्ता दिनेश मरोठी ने टीमवर्क, नूतन रचनात्मक चिंतन, समय प्रबंधन, तीक्ष्ण बौद्धिक क्षमता का विकास, जुनूनी इरादों, खुद और दूसरों की क्षमता को पहचानने की शक्ति, मानसिक अवरोधों, रूढ़ियों को तोड़ने की इच्छाशक्ति आदि महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार प्रस्तुत किए।

किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी अरविंद पोखरणा ने किशोरों एवं युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु ट्रेजर हंट गतिविधि का उपयोग किया। अरविंद पोखरणा ने समय प्रबंधन, रचनात्मकता, मौलिकता के अभ्यास

पर बल दिया। इस अवसर पर तेयुप विजयनगर के पदाधिकारी, अभातेयुप साथी, सीपीएस जोनल टीम सदस्य, तेयुप विजयनगर कार्यकारिणी सदस्य, तेयुप गांधीनगर, तेयुप टी. दासरहल्ली के पदाधिकारी एवं किशोर मंडल साथी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुयी, उसके पश्चात हिट युवा फिट युवा संयोजक श्रेयांस सेठिया ने शारीरिक व्यायाम करवाए। कार्यशाला में संयोजक हेमंत पटावरी का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। आभार सहमंत्री संजय भटेवरा ने किया।

दाम्पत्य शिविर का आयोजन

अहंकार विसर्जन, सहनशीलता और आपसी सामंजस्य सुखी दाम्पत्य जीवन के मंत्र

गुरुग्राम।

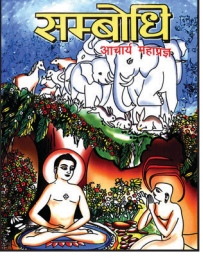
आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्री जी ठाणा-4 के सानिध्य में गुरुग्राम में दाम्पत्य शिविर का आयोजन किया जिसमें लगभग 31 जोड़ों ने भाग लिया।

साध्वी संगीतश्री जी ने कार्यक्रम का प्रारंभ सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए कुछ विशेष संकल्पों से करवाया। आपने कहा - एक रथ के दो पहिए हैं अगर एक पहिया खराब हो जाता है या रथ के एक पहिया रह जाता है तो वह रथ कोई काम का नहीं रहता। उसी तरह पति-पत्नी एक रथ के दो पहिए हैं दोनों का साथ रहना जरूरी है

तभी जीवन की गाड़ी अच्छी तरह से चल सकती है। दाम्पत्य जीवन अच्छा हो इसके लिए सहनशीलता, अहंकार विसर्जन, संशयात्मक प्रवृत्ति को दूर रखना तथा सहजता, सहनशीलता आदि गुण आ जाए तो परिवार सही रह सकता है। रिश्ता और शीशा दोनों बड़े नाजुक होते हैं फर्क सिर्फ इतना होता है कि शीशा गलती से टूटता है और रिश्ता गलतफहमी से टूटता है। इसी क्रम में साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने शांत सहवास के अनेकानेक उपाय बताते हुए कहा कि दाम्पत्य जीवन में माता-पिता के साथ एवं आशीर्वाद का विशेष महत्व रहता है।

साध्वीश्री ने दाम्पत्य जीवन के लिए 'कोई बात नहीं' और 'यह भी बीत जाएगा' का विशेष मंत्र प्रतिदिन स्मरण रखने के लिए कहा। इन मंत्रों के स्मरण से दाम्पत्य में हर समय सुख शांति बनी रह सकती है। आखिर में साध्वीश्री ने रोचक तरीके से सभी जोड़ों को एक गेम खिलाया जिसमें तेरापंथ धर्म संघ की जानकारियां भी सभी को मिली कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष विमल सेठिया ने अपना आभार व्यक्त किया। विवेक जैन, रूबी बाफना, महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम जैन आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग 125 लोगों की उपस्थिति रही।

संबोधि



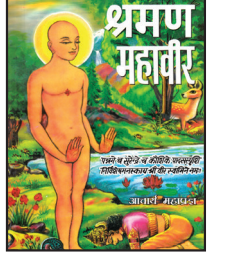
साध्य-साधन- संज्ञान



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर

पुरुषार्थ का प्रदीप



आत्मपुराण में लिखा है-

'कामेन विजितो ब्रह्मा, कामेन विजितो हरिः।
कामेन विजितो विष्णुः, शक्रः कामेन निर्जितः।'

काम ने ब्रह्मा को परास्त कर दिया, काम से शिव पराजित हैं, विष्णु को भी काम ने जीत लिया और इन्द्र भी काम से पराजित है। संसार इससे अतृप्त है। इस दृष्टि से वैज्ञानिकों की बात ठीक है। कबीर ने इसी सच्चाई को प्रकट करते हुए कहा है- 'विषयन वश त्रिहु लोक भयो, जती सती संन्यासी।' इसके पार पहुंचना बड़े-बड़े योगी और मुनियों के लिए भी सहज नहीं है। कुछ ही व्यक्ति इसके अपवाद होते हैं, जो इस विराट ऊर्जा को परमात्मा की ऊर्जा के साथ संयुक्त कर देते हैं। शिव और शक्ति का संयोग साधना है। इस स्वाभाविक शक्ति को कैसे ऊपर उठाया जा सके और कैसे परमात्मा की विराट ऊर्जा में इसका प्रयोग किया जा सके? साधक यदि इसमें दक्ष होता है तो शनैः शनैः वह अपने को इस योग्य बना सकता है। यहां कुछ प्रयोग दिए हैं। इससे पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए और स्वीकार कर लेना चाहिए कि काम वासना एक मौलिकवृत्ति है, सहज है। यह सृष्टि काम का ही विस्तार है। काम की निंदा और घृणा करने से वह नष्ट नहीं होता और न केवल दमन करने से। काम जन्म भी देता और मारता भी है। कहा है-मरणं बिन्दुपातेन, जीवनं बिन्दुधारणात्। ऊर्जा का क्षीण होना मृत्यु है और उसका संरक्षण जीवन है।

'खणमिन्त सुख्वा बहुकाल दुक्खा'- सुख स्वल्प है और दुःख अनल्प है। काम-वासना के सुख से अतृप्त व्यक्ति पुनः उसी सुख के लिए काम-वासना में उतरता है। वह जो थोड़ा सा सुख है, वह है-दो के मिलन का। मनोवैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है- इस सुख की झलक ही आदमी को ध्यान समाधि की ओर प्रेरित करती है। ध्यान में व्यक्ति परम के साथ मिलता है। काम से मुक्त होने के लिए ध्यान है। गहन ध्यान समाधि में द्वैत नहीं रहता। इसलिए काम-ऊर्जा को ध्यान में रूपांतरित करना आवश्यक है। काम ऊर्जा नीचे है, मूलाधार में स्थित है और परमात्मा ऊपर सहस्रार में स्थित है। उस ऊर्जा को सहस्रार तक ले जाना साधना है। उस परम मिलन के क्षण को शिव-शक्ति का योग कहा है- 'हंसः'-हं शिव है और सः शक्ति। इसके विविध प्रयोग हैं। चित्त की एकाग्रता और निर्विचारता ऊर्जा को ऊपर उठाती है और सहस्रार में पहुंचाती है। कुछ मननीय बिन्दु-

१. सबसे पहले आवश्यक है- जागरण। साधक अपने मन, वाणी और शरीर के प्रति पूर्ण होश से भरे रहने का सतत प्रयत्न करे। जब भी चित्त में काम का तूफान उठे, उसे देखे, विचार करे, यह क्या हो रहा है? मैं कहां जा रहा हूँ? क्यों अपना होश खो रहा हूँ? क्या मिला है इससे? काम-वासना के साथ बहे नहीं, रुके और ध्यान करे, मन को ऊपर ले जाए और उसे सहस्रार पर स्थिर करे।

२. मूलबंध-श्वास का रेचन कर नाभि को भीतर सिकोड़ कर गुदा को ऊपर खींचना मूलबंध है। मूलबंध का अभ्यास और पनः-पनः प्रयोग भी काम-विजय में सहायक है।

३. आसन-सिद्धासन पद्मासन, पादांगुष्ठासन आदि भी इसमें उपयोगी होते हैं। काम-केन्द्रों पर दबाव डालकर वासना को निर्जीव किया जा सकता है।

४. योगियों ने इसके लिए विविध प्राणायामों का प्रयोग भी किया है जो वीर्यशक्ति को सहस्रार में स्थित कराता है, वैसा अभ्यास भी साधक के लिए अपेक्षित है। 'श्वास विज्ञान' पुस्तक में से एक प्राणायाम का प्रयोग नीचे प्रस्तुत किया जाता है-

जननशक्ति को परिवर्तित करना - प्राणशक्ति रज या वीर्य में संगृहीत है। जननेन्द्रिय प्राणियों के जीवन में प्राण का एक कोष रूप है। उत्पादन उसका कार्य है। इस शक्ति का प्रयोग विध्वंस में भी किया जा सकता है और विकास में भी। इस काम शक्ति को विध्वंसात्मक न बनाकर विकास में योजित करना मानव की बुद्धिमत्ता है। इसका अभ्यास सरल है। ताल युक्त श्वास एक साधन है। तालयुक्त श्वास का महत्त्व अत्यंत स्पष्ट और प्रभावकारी है तथा अनेक विध प्रयोगों को सफल बनाने वाला है।

(क्रमशः)

(पिछला शेष)

वह अपने आवेग को रोक नहीं सका। वह जैसे ही रस्सी को हाथ में ले महावीर को मारने दौड़ा, वैसे ही घोड़ों के पैरों की आहट ने उसे चौंका दिया। महाराज नंदिवर्द्धन उस दृश्य को देख स्तब्ध रह गए। महाराज ने ग्वाले को महावीर का परिचय दिया। वह अपनी मूर्खता पर पछताता हुआ वापस चला गया।

महावीर की ध्यान प्रतिमा संपन्न हुई। महाराज नंदिवर्द्धन सामने आकर खड़े हो गए। बोले, 'भंते! आप अकेले हैं। जंगल में ध्यान करते हैं। आज जैसी घटना और भी घटित हो सकती है। आप मुझे अनुमति दें, मैं अपने सैनिकों को आपकी सेवा में रखूँ। वे आप पर आने वाले कष्टों का निवारण करते रहेंगे।'

भगवान गंधीर स्वर में बोले, 'नंदिवर्द्धन! ऐसा नहीं हो सकता। स्वतंत्रता की साधना करने वाला अपने आत्मबल के सहारे ही आगे बढ़ता है। वह दूसरों के सहारे आगे बढ़ने की बात सोच ही नहीं सकता।

यह घटना स्वतंत्रता का पहला सोपान है। इसके दोनों पार्श्वों में स्वावलंबन और पुरुषार्थ प्रतिध्वनित हो रहे हैं।

स्वावलंबन और पुरुषार्थ-ये दोनों अस्तित्व के चक्षु हैं। ये वे चक्षु हैं, जो भीतर और बाहर दोनों ओर समान रूप से देखते हैं। मनुष्य अस्तित्व की श्रृंखला की एक कड़ी है। पुरुषार्थ उसकी प्रकृति है। जिसका अस्तित्व है, वह कोई भी वस्तु क्रिया शून्य नहीं हो सकती। इस सत्य को तर्कशास्त्रीय भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है- अस्तित्व का लक्षण है क्रियाकारित्व। जिसमें क्रियाकारित्व नहीं होता, वह आकाश-कुसुम की भांति असत् होता है, मनुष्य सत् है, इसलिए पुरुषार्थ उसके पैर और स्वावलंबन उसकी गति है।

असंग्रह का वातायन : अभय का उच्छ्वास

एक दिन मैं सूक्ष्म लोक में विहार कर रहा था। अकस्मात् शरीर-चेतना से संपर्क स्थापित हो गया। मैंने पूछा, 'शरीर धर्म का आय साधन है- यह तुम्हारी स्वयं की अनुभूति है या दूसरों की अनुभूति का शब्दावरण?'

'क्या इसमें आपको सच्चाई का भान नहीं होता?'

'मुझे यह अपूर्ण सत्य लग रहा है।'

'वाणी में उतरा हुआ सत्य अपूर्ण ही होगा। उसमें आप पूर्णता की खोज क्यों कर रहे हैं?'

'मनुष्य-लोक की समस्या से सम्भवतः तुम अपरिचित हो। शरीर की प्रतिष्ठा के साथ स्वायत्त और व्यक्तिवाद प्रतिष्ठित हो गए हैं। इस समस्या के समाधान के लिए पूर्णता की खोज क्या अपेक्षित नहीं है? तुम्हारी अनुभूति का मूल्य इस सत्य के संदर्भ में ही हो सकता है- शरीर अधर्म का आद्य साधन है।'

'यह कैसे?'

'अधर्म का मूल आसक्ति है, मूर्च्छा है। उसका प्रारम्भ शरीर से होता है। फिर वह दूसरों तक पहुंचाती है।'

मुझे प्रतीत हुआ है कि शरीर-चेतना मेरी गवेषणा का अनुमोदन कर रही है फिर भी मैंने अपनी उपलब्धि की पुष्टि में कुछ कह दिया, 'भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार करने पर कहा, 'चेतन और देह की पृथक्ता का बोध हुए बिना दृष्टिकोण सम्यक् नहीं होता।'

सांख्य-दर्शन का अभिमत है- 'विवेक ख्याति प्राप्त किए बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।'

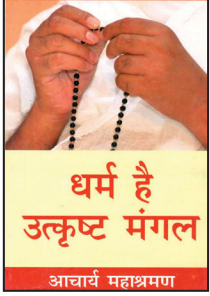
वेदान्त का सिद्धान्त है- 'देहाध्यास से मुक्ति पाए बिना साधना का पथ प्रशस्त नहीं होता।'

मैं शरीर-चेतना को भगवान महावीर के दीक्षाकालीन परिपार्श्व में ले गया। हमने देखा- महावीर घर छोड़कर अकेले जा रहे हैं। उनके शरीर पर केवल एक वस्त्र है, वही अधोवस्त्र और वही उत्तरीय। फिर आभूषणों की बात ही क्या? वे शरीर-अलंकरण को छोड़ चुके हैं। पैरों में जूते नहीं हैं। भूमि और आकाश के साथ तादात्म्य होने में बाधा नहीं आ रही है। भोजन के लिए कोई पात्र नहीं है। पैसे का प्रश्न ही नहीं है। वे अकेले चले जा रहे हैं। सचमुच अकेले! विसर्जन की साधना प्रारम्भ हो चुकी है-देह के ममत्व का विसर्जन, संस्कारों का विसर्जन, विचारों का विसर्जन और उपकरण का विसर्जन।

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण खाद्यसंयम का प्रयोग



पिताश्री! खाना इतना खा लिया है कि न तो उद्गार (डकार) हो रहा है और न ही अधोवायु का निस्सरण। और भोजन के लिए निमन्त्रित किया गया हूँ। आप बताएं क्या करूँ?

पिता ने कहा-

भोजनं कुरु दुर्बद्धे! मा प्राणेषु दयां कुरु।
परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः ॥

पुत्र! प्राणों की चिन्ता मत करो, जाओ भोजन करो। मुफ्त का भोजन कब- कब मिलता है? शरीर तो अगले जन्म में फिर मिल जाएगा।

पिता की यह व्यंग्य प्रेरणा उपभोक्तावादी संस्कृति में पलने वालों के लिए एक बोध-पाठ है।

भाव अवमोदरिका द्रव्य अवमोदरिका से कहीं अधिक मूल्यवान् है। उसके उतने ही प्रकार हो सकते हैं जितने मनुष्य के निषेधात्मक भाव होते हैं। आगम में उसके सात प्रकार मिलते हैं-

अल्पक्रोध- क्रोध को प्रतनु (पतला) करना, क्षमा का प्रयोग करना।

अल्पमान - अहंकार को प्रतनु करना, विनम्रता का प्रयोग करना।

अल्पमाया - छलना का परिहार करना, सरलता का विकास करना।

अल्पलोभ - इच्छा, लालसा का संयम करना, संतोषी वृत्ति अपनाना।

अल्पशब्द- अनपेक्षित और दूसरों को बाधा पहुंचाने वाली भाषा का प्रयोग न करना।

अल्पझञ्झा - कलह का वर्जन करना, कोपाविष्ट होकर शब्दों की बौछार न करना।

अल्पतुमंतुम - तिरष्कारपूर्ण 'तू-तू' शब्दों का प्रयोग न करना।

इस प्रकार क्रोध आदि को अल्प करना भाव अवमोदरिका है। भावशुद्धि के लिए इसकी साधना आवश्यक है।

भाव अवमोदरिका तो कठिन है ही, द्रव्य अवमोदरिका भी सबके लिए आसान नहीं है। जिह्वा-संयम सधे बिना वह अनुष्ठित नहीं हो सकती।

एक बहुभोजी व्यक्ति सन्त के पास गया और बोला- आप अनुभवी हैं, बताइए मैं कौन-सी दवा लूँ जिससे भोजन ठीक तरह से पच जाए? सन्त ने कहा- जब तक एक दवा नहीं लोगे, और दवा क्या काम करेगी? वह दवा है ऊनोदरी। तुम ज्यादा खाते हो और पाचन क्रिया को खराब करते हो। ऊनोदरी करो, कम खाओ, पाचन के लिए यह सर्वश्रेष्ठ दवा है।

ऊनोदरी का प्रयोजन

ऊनोदरी शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जहां लाभदायक है वहीं आध्यात्मिक साधना के विभिन्न अंगों की सम्यक् आराधना में भी वह सहायक बनती है। दिगम्बर-साहित्य में कहा गया है-

धम्मावासय जोगे पाणादीये उवगगहं कुणदि।
णय इंदियप्पदोसयरी उमोदरितवो वुत्ती ॥

क्षमा, मुक्ति आदि दस धर्मों की साधना, सामायिक आदि आवश्यकों की आराधना, योग, स्वाध्याय और इन्द्रिय-नियन्त्रण में ऊनोदरी तप सहायक बनता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऊनोदरी तप किया जाना चाहिए।

ऊनोदरी और स्वास्थ्य

'ऊनोदरी' शब्द 'थोड़ा' का अर्थ देने वाला है। साधु-जीवन निश्चितता और अनिश्चितता का जीवन है। निश्चितता इस रूप में कि वहां कोई चिन्ता नहीं होती। भिक्षा में कल क्या मिलेगा? यह चिन्ता साधु नहीं करता। आज जो उपलब्ध है उसी में वह सन्तुष्ट रहता है, साधना में तल्लीन होकर आत्मानन्द का जीवन जीता है। अनिश्चितता इस रूप में कि मुनि को कभी सरस, कभी विरस, कभी ठण्डा और कभी गरम, कभी पर्याप्त और कभी अपर्याप्त भोजन मिलता है। इसीलिए यह कहा जाता है- 'कदेइ घी घणां, कदेइ मुट्टी चणां' कभी भोजन नहीं भी मिलता है और कभी अल्प मिलता है। मुझे स्मरण है भिक्षा में आहार कम उपलब्ध होने पर एक हमारे स्थविर सन्त बहुधा एक सूत्र दोहराया करते थे 'थोड़े में गुण घणा' कम में बहुत गुण होते हैं। आहार कम होगा तो ऊनोदरी तप होगा, पाचनक्रिया ठीक रहेगी। वस्त्र कम हैं तो उनके प्रतिलेखन और प्रक्षालन में समय कम लगेगा। बातों की आदत कम है तो स्वाध्याय ध्यान में अधिक संलग्नता होगी।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री हीरजी (चंगेरी) दीक्षा क्रमांक : 76

मुनिश्री तपःशूर अणगार थे। अपने जीवन में उन्होंने उपवास से लेकर पंचोले तक का तप अनेकों बार किया। उनके अतिरिक्त बड़ी तपस्याओं का विवरण इस प्रकार है- 8/2, 11/2, 12/1, 16/1, 18/1, 24/1, 31/2, 51/1, 58/1, 61/1, 62/1, 75/1, 82/1, 120/1, 126/1, 135/1, 186/1

- साभार: शासन समुद्र -

अप्रैल 2024

सप्ताह के विशेष दिन

23 अप्रैल

भगवान पद्मप्रभु
केवलज्ञान कल्याणक,
आचार्य श्री रायचंद दीक्षा
दिवस एवं पक्खी

24 अप्रैल

भगवान
कुंथुनाथ निर्वाण
कल्याणक

26 अप्रैल

भगवान
शीतलनाथ निर्वाण
कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

- संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
- समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
- कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
- समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस abtyptt@gmail.com पर ही भेजें।

निवेदक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स



ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

आध्यात्मिक होली के विविध आयोजन

चेन्नई/वालाजावाद

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ठाणा 4 के सान्निध्य में वालाजावाद में होली चातुर्मास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। होली के रंग, लेश्या के संग विषय पर धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वी गवेषणाश्री ने कहा कि भगवान महावीर ने 3 चातुर्मास का निर्देश दिया है। उनमें एक है- होली चातुर्मास। लौकिक और लोकोत्तर पर्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वीश्री ने कहा कि जैन धर्म में होली का बड़ा महत्व है। आज के दिन चातुर्मासिक पक्खी का प्रतिक्रमण कर आत्मावलोचन किया जाता है। आज पानी या बाहरी रंगों की होली नहीं खेलकर, प्रशस्त रंगों के साथ होली खेलना है। होली के विभिन्न रंगों से लेश्याओं को पवित्र, शुभंकर बनाने का आह्वान करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि रंगों की ओजस्विता और प्रकाश से मानव मन व मस्तिष्क बहुत प्रभावित होता है। हमें अपनी नकारात्मक सोच की होली का दहन करना है।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर स्वरों एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने सारगर्भित विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत वालाजावाद के युवकों द्वारा भिक्षु अष्टकम मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ सभा अध्यक्ष महावीर पिपाड़ा ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथ धर्मसंघ की कामधेनु जैन

विश्व भारती अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष गीता धारीवाल, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष जवरीलाल आच्छा, शीला बोहरा, तंडियारपेट ट्रस्ट बोर्ड प्रबन्धन्यासी पूनमचंद माण्डोट आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। गीता मंगल सेठिया, अशोक लूणावत, वालाजावाद महिला मण्डल ने सुमधुर गीतिकाएं प्रस्तुत की। गौतमचन्द सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए ट्रस्ट बोर्ड की ओर से अक्षय तृतीया ट्रिप्लीकेन में करवाने का निवेदन किया।

ज्ञानशाला व किशोर मंडल के बालक बालिकाओं ने रोचक परिसंवाद के माध्यम से 'आध्यात्मिक होली पर्व' की महत्ता प्रस्तुत की। माधावरम से समागत नीलम आच्छा व उनकी टीम ने 'अन्वेषण' बैनर का अनावरण किया। आभार ज्ञापन रमेश धारीवाल ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मयंकप्रभा ने किया।

राउरकेला

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी एवं समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में होली स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष छगनलाल जैन, भूतपूर्व

अध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, महिला मंडल की अध्यक्ष तरुलता जैन ने सभी को होली की हार्दिक शुभकामना दी। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष मिलन डोषी ने सुमधुर गीत द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंतर्गत युवक परिषद् ने एक हास्य नाटक 'आज की पाठशाला' प्रस्तुत किया। महिला मंडल की बहिनों ने 'नशा मुक्त जीवन' पर एक कव्वाली प्रस्तुत की। पुष्पा भंसाली ने अपनी प्रस्तुति दी। समणी करुणाप्रज्ञा जी ने बहुत ही रोचक कविता 'दुनिया बन रही है गोल गोल' का पाठ किया। समणी सुमनप्रज्ञा जी ने एक गीत एवं पहेलियों के माध्यम से लोगों की जानकारी बढ़ाने का प्रयास किया। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने पंच परमेष्ठी के पांच रंगों की विशेषताओं के बारे में सबको बताया और उनसे मिलने वाले लाभ पर प्रकाश डाला तथा जीवन में रंगों के माध्यम से किये जा सकने वाले परिवर्तनों की जानकारी दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन नीतू कोठारी ने किया।

जसोल

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल एवं ज्ञानशाला जसोल द्वारा रंगों का त्योहार होली और शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की दूसरी पुण्य तिथि के कार्यक्रम का आयोजन दो चरण में किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला

मंडल ने गीत के माध्यम से शासनमाता को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

साध्वी मनोज्ञयशा, साध्वी पावनयशा ने गीत के माध्यम से शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी रतिप्रभा जी ने होलिका दहन की कहानी के माध्यम से बताया कि बुराई का अंत होता है और अच्छाई की जीत। चतुर्दशी के उपलक्ष में साध्वीश्री द्वारा हाजरी वाचन भी किया गया।

दूसरे चरण में महिला मंडल द्वारा सामूहिक त्रिपदी वंदना के पश्चात प्रेरणा गीत का मंगल संगान किया गया। 'ॐ ह्रीं श्री क्लीं शासनमात्रै नमः' का सामूहिक जप किया गया। उपासिका मोहनी देवी संकलेचा, पुष्पादेवी बुरड़, ममता मेहता द्वारा मुक्तक, गीत, भाषण के माध्यम से शासनमाता कनकप्रभा जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये गए। साध्वी मनोज्ञयशा जी एवं साध्वी पावनयशा जी ने अपने संस्मरणों के माध्यम से शासनमाता के वात्सल्य भाव एवं शिक्षण विधि को चित्रित किया। साध्वीश्री की प्रेरणा से कई बहनों ने दस प्रत्याख्यान किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कंचन देवी डेलडिया ने आभार ज्ञापन मंत्री अरुणा डोसी ने किया।

अहमदाबाद

पर्यावरण संरक्षण तथा प्राणी मात्र की सुरक्षा के संदेश को संप्रेषित करने हेतु अणुव्रत समिति, अहमदाबाद द्वारा होली फेस्टिवल रंगोत्सव को ईको फ्रेंडली

तरिके से मनाने व जनजागृति के लिए अणुव्रत उद्यान के पास तिलक होली मनाई गयी। लोगों को इको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने व पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरणा दी गई।

इस अवसर पर अणुविभा, अणुव्रत समिति, तेरापंथ सभा आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

मदुरै

मुनि रश्मिकुमार जी के पावन सान्निध्य में मदुरै तेरापंथ सभा के तत्वावधान में होली चातुर्मास पर विशेष प्रवचन का आयोजन मदुरै के जवाहरलाल सरोजा महल में आयोजित हुआ। मुनिश्री जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण चंदादेवी आंचलिया, शांति देवी कोठारी, संतोष कोठारी ने किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला ने स्वागत भाषण दिया।

तेरापंथ ट्रस्ट, तेरापंथ कन्या मंडल, ज्ञानशाला, महासभा आदि से सम्बंधित गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल द्वारा होली पर रोचक गीतिका, व कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने शानदार प्रस्तुति दी। मुनि श्री रश्मि कुमार जी एवं मुनि श्री प्रियांशु कुमार जी ने होली पर विशेष प्रवचन दिया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री अभिनंदन बागरेचा ने किया।

असाधारणता की प्रतिमा शासनमाता का पुण्य स्मरण

दिल्ली

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त मंत्र 'ऊं ह्रीं श्रीं शासनमात्रे नमः' से महारौली, दिल्ली में स्थित वात्सल्य पीठ प्रातः काल से ही गुंजायमान हुआ। साध्वीश्री संगीतश्री जी ठाणा 4, समणी निर्देशिका डॉ. मंजूप्रज्ञाजी ठाणा 3 के सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की द्वितीय पुण्यतिथि का आयोजन अत्यन्त श्रद्धा और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के तत्वावधान में मंत्रोच्चार कार्यक्रम के उपरान्त महाप्रज्ञ सभागार में भावांजलि कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल उत्तरी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली

और मध्य दिल्ली की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। दक्षिण दिल्ली सभाध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा का स्वागत भाषण व दक्षिण दिल्ली महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई।

गुरुग्राम सभा अध्यक्ष बिमल सेठिया, नरपत दुगड़, अणुव्रत समिति की ओर से बाबूलाल दुगड़, तेयुप दिल्ली के मंत्री अमित डूंगरवाल, पूर्वी दिल्ली श्रावक समाज की ओर से सुभाष सेठिया आदि ने भावभिव्यक्ति दी। दिल्ली सभा व गुरुग्राम समाज के सदस्यों ने गीतों के माध्यम से शासनमाता के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। वात्सल्य पीठ प्रकल्प के समन्वयक लक्ष्मीपत बोथरा ने प्रकल्प प्रगति की जानकारी दी। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने

तीन आचार्यों के शासनकाल में धर्मसंघ की सेवा करने वाली शासनमाता को असाधारणता का प्रतिमान बताया। साध्वी संगीतश्रीजी व समणी डॉ. मंजूप्रज्ञाजी ने साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर संस्मरणात्मक प्रकाश डाला। उनकी सीख को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी, साध्वी मुदिताश्रीजी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी व समणी हंसप्रज्ञाजी ने शासनमाता से प्राप्त वात्सल्य की चर्चा करते हुए भावांजलि अर्पित की। दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने काव्यमय संचालन किया। कार्यक्रम की आयोजना के प्रमुख संदीप डूंगरवाल ने आभार ज्ञापन किया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का हुआ आयोजन

औरंगाबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, औरंगाबाद द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य प्रशिक्षक अखिल मारू ने मार्गदर्शन दिया। प्रशिक्षक का स्वागत समाज के वरिष्ठ श्रावक ज्ञान मुथा ने किया। प्रशिक्षक अखिल मारू ने बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्तित्व विकास के अनेक पहलू जैसे टाइम मैनेजमेंट, पॉजिटिव एटीट्यूड, परसेप्शन आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की एवं उपस्थित प्रतिभागियों की समस्याओं का

समाधान किया। उन्होंने दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों के साथ व्यक्तित्व विकास हेतु प्रेरणा दी। कार्यक्रम में भिक्षु चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष मदनलाल आच्छा, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष अंकुर लूनिया, टीपीएफ के अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर, वरिष्ठ श्रावक कमलेश सेठिया, किशोर मंडल संयोजक भूषण छल्लाणी ने अपने विचार रखे। उपस्थित प्रतिभागियों ने तेरापंथ युवक परिषद् टीम को ऐसे सेमिनार लगातार आयोजित करने के लिए निवेदन किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन विवेक बागरेचा ने किया और आभार प्रदर्शन तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री मयूर आच्छा ने किया।



पत्रकार वार्ता में गूँजे संस्कारों को पल्लवित करने के स्वर

नोएडा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में बोथरा निवास, नोएडा में 'हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति' विषय पर पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अनेक पत्रों के पत्रकार बंधु उपस्थित हुए। साध्वी अणिमाश्री जी ने परिषद को सम्बोधित करते हुए कहा- हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें भारतीय संस्कृति में पल्लवित व पुष्पित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। एक समय था जब भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था, भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था। आज हमें चिन्तन करना है कि हम ह्रासोन्मुख हैं या विकासोन्मुख। संस्कार को ताक पर रखकर होने वाला विकास जिन्दगी को सुकून नहीं दे सकता। जरूरत है हम अपने संस्कारों को सुरक्षित रखें।

साध्वीश्री ने आगे कहा- आज व्यक्ति आगे बढ़ने की होड़ में अपनी संस्कृति को नजर अन्दाज करके पश्चिमी संस्कृति को अपना रहा है। आज खुले आम मद्यपान चल रहा है, यह नशा नाश का द्वार है, विनाश का, तबाही का मंजर है। समय रहते सचेत व सावधान बनें और अपने परिवार, समाज व देश के भविष्य को शानदार बनाने में योग्यभूत बनें। साध्वीश्री ने पत्रकारों के प्रश्नों का समुचित समाधान किया। साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने पत्रकारों के कर्तृत्व को व्याख्यायित करते हुए उनकी सेवा को सराहनीय बताया एवं आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। साध्वी मैत्रीप्रभाजी एवं साध्वी समत्वयशाजी ने अपने भावों की गीत एवं वक्तव्य के द्वारा अभिव्यक्ति दी। विकास जैन ने सभी पत्रकारों का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनका स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। सभाध्यक्ष रणधीर बैद, महासभा संरक्षक बजरंग बोथरा, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीपत बोथरा ने आगन्तुक पत्रकारों का साहित्य द्वारा सम्मान किया। इस कार्यक्रम को संचालित करने में श्री विकास जैन का श्रम मुखर हुआ।



संस्कार को ताक पर रखकर होने वाला विकास जिन्दगी को सुकून नहीं दे सकता। जरूरत है हम अपने संस्कारों को सुरक्षित रखें।

नैतिक मूल्यों के अवतरण हेतु जीवन में संयम आवश्यक

उधना-सूरत।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि उदितकुमार जी की सन्निधि में 'नैतिक मूल्यों का अवतरण' विषयक सेमिनार का आयोजन तेरापंथ भवन उधना-सूरत में हुआ।

सेमिनार के मुख्य अतिथि के रूप में असम के महामहिम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया उपस्थित थे। राज्यपाल ने अपने विद्वत्पूर्ण वक्तव्य में कहा- नैतिक मूल्यों के अवतरण हेतु आचार्यश्री तुलसी रचित अणुव्रत

गीत काफी है। लोग प्रातः हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। इस तरह प्रतिदिन प्रातः इस गीत के एक-एक अक्षर पर गहराई से विमर्श करें तो उनके जीवन में नैतिकता का अवतरण अपने आप हो जाएगा।

राज्यपाल महोदय ने आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमण का श्रद्धा के साथ उल्लेख किया। मुनि उदित कुमार जी ने कहा- नैतिक मूल्यों के अवतरण हेतु भीतर में श्रद्धा आवश्यक है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से संयम: खलु जीवनम् का सूत्र दिया। वस्तुतः नैतिक

मूल्यों को जीवन में अवतरित करने के लिए चार बातें आवश्यक हैं- नैतिकता के प्रति आस्था, जीवनशैली में परिवर्तन, संयम की चेतना का विकास और संवेदना का भाव। कार्यक्रम के प्रारंभ व अंत में राष्ट्रगान का संगान हुआ। महिला मंडल के गीत संगान के बाद उधना तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बसंतिलाल नाहर ने स्वागत वक्तव्य दिया। अनुराग कोठारी ने राज्यपाल का परिचय दिया। संचालन सभा के मंत्री सुरेश चपलोट ने किया। राज्यपाल महोदय का मोमेंटो साहित्य आदि से सम्मान किया गया।

नारी विकास का पर्याय साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी

अहमदाबाद। अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम अहमदाबाद के तत्वावधान में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर जाप का कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी, मुनि मदन कुमार जी, 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी, 'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में संपादित किया गया। महिला मंडल की बहिनों ने सुमधुर

स्वर में मंगलाचरण कर शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी तरुणप्रभा जी, साध्वी परमार्थप्रभाजी, समणी जिनप्रज्ञाजी एवं समणी शांति प्रज्ञा जी ने शासनमाता के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने तेरापंथ धर्म संघ और नारी विकास के लिए बहुत काम किया। उन्होंने साहित्य

का निर्माण कर समाज को नयी प्रेरणा प्रदान की। नारियों को कुप्रथा के भंवर से निकालकर समाज के क्षेत्र में आगे लाने का अथक प्रयास किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी संवेगप्रभाजी जी ने किया। इस अवसर पर भाई-बहिनों ने एकासन, उपवास, जमीकंद त्याग, विगय वर्जन, रात्रि भोजन त्याग आदि प्रत्याख्यान किए। लगभग 570 भाई-बहिनों ने जप अनुष्ठान में भाग लिया।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि विजय कुमार जी : रतनगढ़
साध्वी संयम प्रभा जी : सिरसा

अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स एवम् ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का आयोजन

अहमदाबाद।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, अहमदाबाद द्वारा अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स एवम् ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का आयोजन शाहपुर उर्दूशाला में किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण परामर्शक मोहन कोठारी द्वारा अणुव्रत गीत से किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग ने स्वागत भाषण के साथ अणुव्रत के नियमों का विश्लेषण किया एवम् ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के तहत होली पर जल का अपव्यय नहीं करने, तिलक होली मनाने को कहा। आने वाले समय में जल की समस्या ना हो इसके लिए जल संरक्षण करना जरूरी है।

परामर्शक जवेरीलाल संकलेचा ने मेमोरी पॉवर के अनेक प्रयोग करवाए।

उपाध्यक्ष सुरेंद्र लूणिया ने अणुव्रत के उद्देश्यों को विस्तार से बताया। मंत्री डिम्पल श्रीमाल ने अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स की जानकारी देते हुए दिन में 15 मिनट से ज्यादा मोबाइल स्क्रीन नहीं करने का नियम दिलाया। संगठन मंत्री मुकेश पोखरणा ने प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के तीन नियम के संकल्प करवाए।

विद्यालय के आचार्य अकरम भाई ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि उन्हें अणुव्रत के नियम बहुत अच्छे लगे एवम् अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने की भावना व्यक्त की।

आचार्य अस्माबेन ने कहा कि अणुव्रत के नियम किसी भी धर्म संप्रदाय के लिये नहीं बल्कि मानवीयता के लिए हैं, उन्होंने भविष्य में भी अणुव्रत के कार्यक्रम करने की स्वीकृति प्रदान की। आभार ज्ञापन शर्मिला बोराणा ने किया।

साध्वियों के नोखा पदार्पण पर हुआ आध्यात्मिक मिलन

नोखा। तेरापंथ धर्मसंघ में आध्यात्मिक मिलन समारोह आपसी प्रेम, सौहार्द, विनय, वात्सल्य भरा अद्वितीय होता है।

साध्वी पान कुमारीजी एवं साध्वी मूलां जी धर्म संघ की प्रबुद्ध एवं मिलनसार साध्वी थीं। उनके ग्रुप की साध्वी मंगलयशाजी का नोखा आना विशेष खुशी जाहिर करता है। स्व कल्याण करते पर कल्याण का मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए शासनगौरव साध्वी राजीमती ने उनका स्वागत

किया। साध्वीवृंद ने 'आज पधारया म्हारे आंगणे' स्वागत गीतिका का संगान किया। साध्वी मंगलयशाजी ने साध्वी राजीमती को योग साधिका एवं धर्मसंघ की विलक्षण साध्वी बताया। आगन्तुक साध्वी वृंद ने दर्शन पर गीत से अपनी भावनाएं व्यक्त की।

सभा अध्यक्ष इन्दरचन्द बैद, उपाध्यक्ष सुनील अनुराग बैद, महिला मंडल अध्यक्षा सुमन मरोठी, समता बैद ने आध्यात्मिक मिलन को प्रेरणास्पद बताया।



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिला बेस्ट एनजीओ अवार्ड जैन रत्न अवॉर्ड्स 2024 का आयोजन

इन्दौर।

अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन महिला संघ की केन्द्रीय इकाई द्वारा इन्दौर के अभय प्रशाल ऑडिटोरियम में जैन रत्न अवॉर्ड्स 2024 का भव्य आयोजन किया गया।

आठ से दस हजार जन समूह की उपस्थिति के इस विशाल समारोह में समग्र इन्दौर जैन समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। केन्द्रीय इकाई की संस्थापक अध्यक्ष रेखा जैन व अध्यक्ष शकुन्तला पावेचा भी उपस्थित थी। इस भव्य आयोजन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल को उनके सामाजिक कार्यों के लिए 'बेस्ट एनजीओ अवार्ड' से नवाजा गया।

यह अवार्ड प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री



पूनम दिल्ली व इंडियन टेलीविजन के प्रसिद्ध एंकर मनीष पॉल द्वारा प्रदान किया गया। 500 शाखा मंडलों की 70,000 महिला शक्ति का नेतृत्व करने वाली राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपनी टीम महामंत्री नीतू ओस्तवाल, प्रचार प्रसार मंत्री सरिता

बरलोटा, राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य प्रभा घोड़ावत व इन्दौर महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष सुमन दुग्गड के साथ 'बेस्ट एनजीओ अवार्ड' सम्मान स्वीकार किया। इस विशेष उपलब्धि के लिए समस्त तेरापंथ समाज ने बधाई व शुभकामनाएं दी।

शासनमाता का अद्भुत था समर्पण

राजलदेसर।

तेरापंथ धर्मसंघ एक गौरवशाली धर्मसंघ है जहां आचार्यों की गौरवशाली परंपरा है वहीं साध्वीप्रमुखाओं की भी गौरवशाली परंपरा है। आज तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उन्हें बहुमान व सम्मान देते हुए शासनमाता का अलंकरण दिया। शानमाता साध्वीप्रमुखा जी समर्पण की जीवंत प्रतिमा थी। उनका मानना था कि मैं तो एक अनगढ़ पाषाण खंड के रूप में इस धर्मसंघ में आई और गुरुदेव

तुलसी ने मुझे तराश कर प्रतिमा का रूप दिया। ऐसी विलक्षण व्यक्तित्व की धनी शासनमाता ने अपने 50 वर्षीय अनुशासना में साध्वी समाज को जो ऊंचाइयां दी है वह अविस्मरणीय है। समूचा साध्वी समाज शासनमाता के वात्सल्यमय नेतृत्व से श्रद्धा प्रणत था। आज शासनमाता तो हमारे बीच नहीं है पर हम उनके सद् संस्कारों को अपने जीवन में आत्मसात करें यही अभिप्सा है।

ये विचार 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने शासनमाता की पुण्यतिथि पर व्यक्त किए। इस अवसर पर साध्वी कीर्तिरेखा जी ने अपने भावों

की अभिव्यक्ति दी। साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी चैत्यप्रभा जी, साध्वी इन्दुयशा जी एवं साध्वी स्नेहप्रभा जी ने 'व्यक्तित्व शासनमाता का' कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कीर्तिरेखा जी एवं साध्वी काव्ययशा जी के मंगलाचरण से हुआ। रीना बैद, प्रेमदेवी विनायकिया ने भी अपने विचारों के द्वारा अभ्यर्थना की।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इन्दुयशा जी ने किया। दोपहर में 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रै नमः' के जप में अच्छी संख्या में महिला मंडल की बहनों ने भाग लिया।

नारी जाति के लिए आदर्श बनी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

बालोतरा।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा के तत्वावधान में शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर जाप का कार्यक्रम न्यू तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ठाणा-4 के सानिध्य में संपादित हुआ। नमस्कार महामंत्र के संगान के बाद उपस्थित भाई-बहनों एवं ज्ञानशाला के

बच्चों द्वारा 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रै नमः' का सामूहिक जाप किया गया।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने तेरापंथ धर्म संघ और नारी विकास के लिए खूब काम किया। उन्होंने साहित्य का निर्माण कर समाज को नयी प्रेरणा प्रदान की।

नारियों को कुप्रथा के भंवर से निकालकर समाज के क्षेत्र में आगे लाने का अथक प्रयास किया। साध्वीवृंद द्वारा

शासनमाता को समर्पित एक सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर भाई-बहनों ने एकासन तप, उपवास जमीकंद त्याग आदि विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान भी किये।

कार्यक्रम में अध्यक्ष निर्मला संकलेचा आदि पदाधिकारी, एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेखा बालड ने किया। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष पुष्पा सालेचा ने किया।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप जांच का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मरियप्पनपाल्या स्थित गायत्री पार्क में निःशुल्क मधुमेह जांच एवं रक्तचाप शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच के अंतर्गत रैंडम ब्लड शुगर एवं रक्तचाप जांच की गई। लगभग 2 घंटे तक चले शिविर में कुल 79 सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप सदस्यों ने स्थानीय लोगों से वार्तालाप करते हुए एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं एवं डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया। स्थानीय लोगों ने परिषद् परिवार के प्रति मंगलकामना संप्रेषित करते हुए सेंटर द्वारा प्रदत्त सेवाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इस शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में एटीडीसी स्टाफ दीपा एवं स्मिता का सम्पूर्ण सहयोग रहा। तेयुप सदस्यों ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

गवर्नमेंट स्कूल में बांटें ट्रैक सूट

राजराजेश्वरी नगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर द्वारा अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए 4 सरकारी विद्यालयों क्याशपुरा गवर्नमेंट स्कूल, वडारा डोडी प्राइमरी स्कूल, हनुमानहल्ली प्राइमरी स्कूल एवं चौडेश्वरीहल्ली प्राइमरी स्कूल रामनगर में पढ़ रहे 84 बच्चों को हनुमानमल, संजय, मनोज बैद नोखा बेंगलुरु एवं मार्गदर्शन फाउंडेशन के सहयोग से ट्रैक सूट सेट का वितरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। विद्यालयों के प्राध्यापकों ने तेयुप आर आर नगर द्वारा किए गए सेवा कार्य की सराहना करते हुए धन्यवाद किया। इस अवसर पर परिषद् से सेवा कार्य प्रभारी हितेश बोथरा, कार्यसमिति सदस्य मोहित बोथरा एवं प्रदीप छाजेड़ ने सेवा कार्य में सहयोग किया।

रक्तदान शिविर आयोजित

पाली। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के रिदम आयाम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् पाली ने अपना तीसरा कैम्प राजकीय बागड अस्पताल के ब्लड बैंक में आयोजित किया। 22 युवा साथियों ने कैम्प में रक्तदान कर सहभागिता दर्ज करवाई। अभातेयुप के तत्वावधान में परिषद् ने मार्च माह में पहले 53 यूनिट रक्तदान करवाया। शिविर में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् से मारवाड़ संभाग प्रमुख रोशन नाहर, रक्त दान संयोजक पीयूष भंसाली, पदाधिकारी, किशोर मंडल संयोजक क्रिस चोपड़ा एवं पूरी टीम का सहयोग रहा।

तेरापंथ दर्शन की परीक्षा

मदुरै। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में आयोजित आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तेरापंथ दर्शन सेकंड ईयर की परीक्षा में मदुरै से कुल तीन बहनों ने भाग लिया। जिसमें अनुपमा बोथरा ने पूरे भारत वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दीपिका फुलफगर ने पूरे भारत वर्ष में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। मधु जीरावला ने भी अच्छे अंक प्राप्त किये। यह मदुरै तेरापंथ समाज के लिए भी गौरव की बात है। तेरापंथ महिला मंडल मदुरै ने इस उपलब्धि पर तीनों बहनों को बधाई प्रेषित करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

सम्यक् आचार में सहायक है ज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

पुणे।

02 अप्रैल, 2024

पुणे प्रवास के पंचम दिवस अध्यात्म के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की वर्षा कराते हुए फरमाया कि ज्ञान का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ज्ञान विकास का एक बड़ा साधन है-स्वाध्याय। जैन साधना पद्धति में तपस्या के बारह प्रकारों में दसवां प्रकार स्वाध्याय है। मुनि की दिनचर्या में आठ प्रहर में चार प्रहर स्वाध्याय के लिए, दो प्रहर ध्यान के लिए और दो प्रहर शारीरिक संरक्षण के लिए बताए गए हैं। शास्त्रकार ने स्वाध्याय को ज्यादा महत्व दिया है। साधु का जीवन तो साधना के लिए अर्पित होता ही है परंतु कई बार वैयावृत्य के लिए स्वाध्याय को भी गौण करना पड़ सकता है।

कई चारित्रात्माओं के पास प्रतिभा का अच्छा योग है, वे ज्ञान की दिशा में अच्छा विकास कर सकते हैं। कई सेवा में निपुण हैं, उनको सेवा का ज्यादा अवसर मिल सकता है। कहा गया है- ऐसा कोई अक्षर नहीं होता जो मंत्र नहीं बन सकता। ऐसा कोई मूल नहीं है जो औषध के रूप में काम नहीं आ सकता और सामान्यतया ऐसा कोई आदमी नहीं जिसमें कोई योग्यता न हो। तो कमी किस बात की है? योजना करने वाले, प्रबन्धक, नियोजक की कमी हो सकती है।

नियोजक व्यक्ति मिल जाये कि कौनसा अक्षर कहां जोड़ा जाए जिससे अच्छा मंत्र बन जाये। कौनसी जड़ी बूटी किस बिमारी में काम आ सके, यह ज्ञान



हो तो मूल औषध के रूप में काम आ सकती है। किस आदमी को कहां लगाना चाहिये, क्या उपयोग करना चाहिए, यह विवेक हो तो उस आदमी का उपयोग किया जा सकता है। जिसकी जहां अच्छी उपयोगिता हो सके, उस रूप में उसे संयोजित कर दिया जाये तो आदमी बड़ा उपयोगी हो सकता है, उसका जीवन सार्थक हो सकता है।

जितना समय मिले उसे स्वाध्याय, जप या तत्व चर्चा में उपयोग किया जा सकता है। कहा गया है कि बारह प्रकार का जो तप है, उनमें स्वाध्याय के समान कोई दूसरा तप: कर्म न है और न होगा। ज्ञान का विकास करने के लिए स्वाध्याय की अपेक्षा रहती है। स्वाध्याय भी योग्यता के अनुसार होना चाहिए। आगम स्वाध्याय करने की भी अपनी अलग-अलग समय सीमा है।

भगवान महावीर की वाणी जो आगमों में गुंफित है उसमें अथाह ज्ञान राशि है। आचार्य भिक्षु के ग्रन्थों में भी कितनी ज्ञान की बातें मिलती हैं। श्रीमद् जयाचार्य ने तो भगवती जोड़ की विशाल रचना कर दी थी। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का भी विशाल साहित्य भंडार है। साहित्य के स्वाध्याय से ज्ञान संवृद्धि और समृद्धि हो सकती है। हमारे यहां आगम संपादन का कार्य हुआ है, वर्तमान में हो भी रहा है। जैन विश्व भारती तो मानो ज्ञान का भंडार है, वहां कितना साहित्य, कितनी पांडुलिपियां, पुरानी प्रतियां प्राप्त हो सकती हैं। आगम वांगमय, ग्रंथ आदि साहित्य के स्वाध्याय से, चिन्तन-मनन से, अनुप्रेक्षा से ज्ञान की संवृद्धि और समृद्धि हो सकती है।

साधु-साध्वियाँ स्वाध्याय करें, गृहस्थ भी स्वाध्याय कर सकते हैं। आत्म

कल्याण, कर्म निर्जरा के अनेक मार्ग हैं। स्वाध्याय के साथ ध्यान का भी महत्व है। स्वाध्याय के साथ ध्यान को भी जोड़ा जा सकता है, जो पढ़ा उस पर चिन्तन-मनन करें। भाव क्रिया अपने आप में ध्यान है। जो कार्य करें उसमें अपने चित्त को नियोजित कर के रखें, वह भी ध्यान हो सकता है।

ज्ञान होने से करणीय और अकरणीय की स्पष्टता हो सकती है। स्वाध्याय से ज्ञान होता है और ज्ञान से हमारा आचार भी सम्यक् हो सकता है। गलती होने का एक कारण है ज्ञान का अभाव। ज्ञान होने से ज्ञानाभाव के कारण होने वाली गलतियों का निरोध हो सकता है। अनुभव और प्रशिक्षण से आदमी अच्छा कार्य कर सकता है। हमारा कार्य सुसंपादित हो सके इसलिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि स्वास्थ्य

लाभ हेतु साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास पुणे में ही निर्णीत किया गया है।

साध्वीवर्याजी ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि जब आदमी दुनिया से जाता है तो साथ में अच्छे या बुरे किये हुए कर्म लेकर जाता है। अच्छे कर्म से अच्छे फल मिलते हैं और बुरे कर्मों का बुरा फल मिलता है। हर व्यक्ति सुख, सफलता और शांति चाहता है। सत्पुरुषार्थ से व्यक्ति शुभ कर्मों को प्राप्त कर सकता है। हमें सुकृत करना है और अपने आचरण और व्यवहार को सुंदर बनाना है। हमें यह दुर्लभतम मनुष्य जीवन, जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ और आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे गुरु मिले हैं, यह सब हमारे सुकृत का ही परिणाम है।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि हमें तीर्थंकर कल्प अतिशयधारी आचार्य प्राप्त हुए हैं। सहवर्ती साध्वी वृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। सन 2023 में पूना में चातुर्मास करने वाली साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने भी पूज्य प्रवर की अभिवन्दना में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

स्थानीय सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों की ओर से संजय मरलेचा ने पूज्यप्रवर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। साधु-साध्वियों ने पूज्य प्रवर से वर्षीतप के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। दिव्यांग बालक प्रथमेश सिन्हा ने पूज्य चरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मानव जीवन है दुर्लभ और महत्वपूर्ण : आचार्य श्री महाश्रमण

कल्याणी नगर।

3 अप्रैल, 2024

भैक्षव शासन के सरताज जन-जन का कल्याण कराने वाले आचार्य श्री महाश्रमण जी अपना पंच दिवसीय पूना प्रवास पूर्ण कर कल्याणी नगर पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पूज्य प्रवर ने फरमाया कि शास्त्र की वाणी है कि यह मनुष्य भव दुर्लभ है। सब प्राणियों के लिए लंबे काल तक यह दुर्लभ रह सकता है। यह दुर्लभ मानव जीवन वर्तमान में हमें प्राप्त है, इस माने में हम भाग्यशाली हैं।

मानव जीवन दुर्लभ भी है और महत्वपूर्ण भी। इस दुर्लभ मानव जीवन में जो अध्यात्म की ऊंचाई प्राप्त की जा सकती है वह ऊंचाई अन्य किसी भी जीवन में प्राप्त नहीं हो सकती है।



केवलज्ञान की प्राप्ति केवल मनुष्य भव में ही हो सकती है। मोक्ष की प्राप्ति भी मनुष्य जन्म से ही हो सकती हो। उच्च कोटि के देवों को भी मोक्ष जाने के लिए मानव भव में आना ही होगा।

हम इस मानव जीवन का बढ़िया उपयोग करें, इसे सुफल बनाये। यह

मानव जीवन एक प्रकार का वृक्ष है, जिसमें फल लगने चाहिए। पहला फल है जिनेन्द्र पूजा। हम राग-द्वेष मुक्त जिनेश्वर भगवान की पूजा करें। हम चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति चौबीसी के माध्यम से भी कर सकते हैं। स्तुति करने से हमारे भीतर भी गुण संक्रमण हो सकते

हैं। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र ने कहा कि जिनकी राग आदि विकृतियां क्षीण हो चुकी हैं, चाहे उनका नाम ब्रह्मा हो, विष्णु हो, महेश हो या अर्हत् हो, उन आत्माओं को मेरा नमस्कार है।

दूसरा फल है- गुरु पर्युपासना। संसार में हमेशा कम से कम 20 तीर्थंकर तो रहते ही हैं। पर साक्षात् तीर्थंकर नहीं हो तो गुरु की उपासना करो, गुरु की इंगित-आज्ञा में रहो। तीसरी बात बताई गई- सत्त्वानुकम्पा। प्राणीमात्र के प्रति दया का भाव रहे, अपनी ओर से किसी को तकलीफ न हो, हिंसा न हो। चौथा है- सुपात्र दान। जो त्यागी साधु-सन्त हैं, महाव्रतों की आराधना करने वाले हैं, उन्हें सुपात्र में दान दो, संयम की साधना में सहयोगी बनो। पांचवा फल है- गुणानुराग, गुणों के प्रति अनुराग। हम

व्यक्ति की नहीं गुणों की पूजा करें।

छठी बात है- श्रुतिरागमस्य। अपने कानों से धर्म की वाणी, कल्याणी वाणी सुनें, जिनसे कान धन्य हो जाएं। कान में आगम वाणी को बूंदें प्रवेश कर जाएं, तो वे कल्याणकारिणी हो सकती हैं। मानव जीवन में रूपी वृक्ष में ये फल लगें और हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्य प्रवर की अभिवंदना में विनोद दुग्ड़, सरला नाहटा, वर्षा नाहटा, मनोज सकलेचा, मूर्ति पूजक संघ से सुधीर घेमावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुख्य प्रवचन से पूर्व महिला मंडल की सदस्याओं ने पूज्य प्रवर के स्वागत में गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ज्ञान में करें तर्क और आज्ञा में रहें सतर्क : आचार्य श्री महाश्रमण

पुणे।

01 अप्रैल, 2024

सीमंधर समवसरण में आध्यात्मिक सम्पदा के धारक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृतधारा बहाते हुए फरमाया कि हमारे शरीर में पांच इंद्रियां हैं। ये पांच इंद्रियां अपने निर्धारित विषयों का ग्रहण करती हैं। इंद्रियों से संबंधित तीन बातें होती हैं- इन्द्रिय, इन्द्रिय विषय और इन्द्रिय का व्यापार।

श्रोत्र का विषय है- शब्द और उसका व्यापार है- सुनना। चक्षु का विषय है- रूप और उसका व्यापार है देखना। घ्राणेंद्रिय का विषय है- गन्ध और उसका व्यापार है- सूंघना। रसनेंद्रिय का विषय है- रस और उसका व्यापार है- आस्वाद का अनुभव करना। स्पर्शनेंद्रिय का विषय है- स्पर्श और उसका व्यापार है- छूना।

ये पांच इंद्रियां ज्ञानेंद्रियां हैं तो भोगेंद्रियां भी हो सकती हैं। इंद्रियों से ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं, तो राग-द्वेष युक्त होकर आसक्ति कर आदमी विषयों का भोग भी कर सकता है। श्रोत्र और चक्षु ये दो कामी इंद्रियां हैं शेष तीन भोगी इंद्रियां हैं। श्रोत्र प्राप्यकारी है, शब्द को प्राप्त कर उसका अवबोध करता है। पर रूप आंख के अन्दर नहीं जा सकता उसे हम दूर से देखते हैं। इसलिए वह अप्राप्यकारी है। घ्राण, रसन और स्पर्श भी प्राप्यकारी हैं।

ज्ञान प्राप्ति में ज्यादा सक्षम-श्रोत्र और चक्षु प्रतीत होती हैं। इन दो से जितना ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, उतना संभवतः घ्राण, रसन और स्पर्शन से नहीं किया जा सकता।

कान से सुनकर आदमी कितना



ज्ञान कर लेता है। रोहिण्य चोर ने भी भगवान महावीर की वाणी को सुनकर ज्ञान कर लिया था। चौदह पूर्वों का ज्ञान भी सुनकर ग्रहण किया जाता था। इसी प्रकार चक्षु भी हमारे ज्ञान का बड़ा माध्यम है। आंखों से पढ़कर ग्रंथों का ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। कान से सुनकर कोई बात आंखों से देख ली जाती है, तो वह प्रमाणित हो जाती है। श्रोत्र और चक्षु के द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त करने, अध्ययन-अध्यापन करने में सक्षम सहयोग मिलता है।

शब्द का अर्थ हमें ज्ञात हो तो हमारा ज्ञान बढ़ सकता है। भाषा के क्षेत्र में बताया गया है कि जिसे व्याकरण का ज्ञान नहीं है, वह अन्धे के समान है। जिसके पास शब्दकोष नहीं है, वह बहरा है, साहित्य का विकास नहीं है वह पंगु है और तर्क शक्ति नहीं है वह मूक है।

विद्यार्थी में तार्किक बुद्धि होना शुभ का, उसके विकास का संकेत है। ज्ञान में तर्क करें और आज्ञा में सतर्क रहें।

इंद्रियों का एक पक्ष है ज्ञान का विकास, दूसरा है साधना। इंद्रिय विषयों के ग्रहण में समता भाव रखना साधना है। साधना का तात्पर्य यह है कि जो शब्द हमने सुना, उसका अर्थ भी आ गया, उसमें समता-शांति रखें। यथार्थ को समझें, अयथार्थ बातों से तनाव न करें। साधना के क्षेत्र में रूप से भी ज्यादा महत्त्व शरीर की सक्षमता का है। बाह्य आभूषणों से भी ज्यादा महत्त्व सद्गुण रूपी आभूषणों का है।

सुन्दरता तो शुभ नाम कर्म का उदय है पर चारित्र तो क्षयोपशम भाव है। हम इंद्रियों के विषय के प्रति राग-द्वेष से बचने का प्रयास करें। इंद्रियों का सदुपयोग करें। हम आत्म दर्शन करने

का प्रयास करें। सम्यकत्व और चारित्र को ज्यादा से ज्यादा निर्मल रखने का प्रयास करें तो कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

मुख्य प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सौन्दर्य दो प्रकार के होता है-बाह्य और आंतरिक। बाह्य सौन्दर्य का महत्त्व कुछ अंशों में हो सकता है परंतु आंतरिक सौन्दर्य का महत्त्व अधिक है। आंतरिक सौन्दर्य अच्छा हो तो हमारा जीवन भी अच्छा बन सकता है। आंतरिक सौन्दर्य को निखारने, स्वभाव परिवर्तन करने के संबंध में दो धाराएं हैं। कुछ का मानना है कि स्वभाव में परिवर्तन संभव नहीं है, कुछ मानते हैं की परिवर्तन किया जा सकता है। अध्यात्म वेत्ताओं के चिंतन के अनुसार व्यक्ति के भीतर तीव्र इच्छा हो तो सज्जन व्यक्तियों के संयोग से स्वभाव

का रूपान्तरण हो सकता है। आचार्य प्रवर की प्रेरणा से भी अनेक व्यक्तियों का रूपान्तरण होता है। बदलने के भी दो रूप होते हैं- गलतियों को छिपाकर या बुराइयों को मिटाकर। व्यक्तित्व को सुंदर बनाने के लिए हमें हमारी बुराइयों को मिटाकर दूर करना है।

पूज्य प्रवर की अभिवंदना में तरुण मोदी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ समाज से संयोजक महेंद्र मरलेचा, मूर्तिपूजक संघ से राजेंद्र जी बांठिया, स्थानकवासी समाज से प्रवीण भाई, फतेहचंद रांका, स्थानीय सभाध्यक्ष महावीर कटारिया, स्थानीय सांसद मेघाताई कुलकर्णी, आमदार माधुरीताई विशाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्य प्रवर ने फरमाया कि सब प्राणीयों के प्रति मैत्री भाव रहे, गुणी जनों के प्रति प्रमोद भावना रहे, जो दुःखी जीव हैं, उनके प्रति मेरी करुणा की भावना रहे, विपरीत परिस्थिति के प्रति भी मेरे मन में मध्यस्थ भाव बना रहे। ये चार भावनाएं हमारे जीवन को विभूषित करने वाली हैं। वर्षोत्प शुरु करने का दिन कल से शुरू हो रहा है जो भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है।

वर्तमान शासन हमारा भगवान महावीर से जुड़ा हुआ है। जैन समाज में परस्पर साधार्मिक भावना रहे। जैन विद्या का भी प्रचार-प्रसार होता रहे।

पुणे क्राइम ब्रांच प्रमुख अनिल पुण्डरिक एवं अभय छाजेड़ ने डिजिटल डिटॉक्स के बारे में अपने विचार अभिव्यक्त किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

